SAPTHAGIRI
(HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED
MONTHLY
Volume:54, Issue: 01
June-2023, Price Rs.20/-.
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

जून-2023
रु.20/-

वज्र-कवच समर्पण
(02-06-2023)

मोती-कवच समर्पण
(03-06-2023)

स्वर्ण-कवच समर्पण
(04-06-2023)

तिरुमल श्री बालाजी का ज्येष्ठाभिषेक महोत्सव

दि. 02.06.2023 से दि. 04.06.2023 तक

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

'पंचगव्यों' से तैयार किए गए उत्पादक

उर्वि नासल बूंद
सर्दी और सर दर्द को कम करती हैं और आंखें, कान तथा नाक के काम को सुगम बनाती हैं।

भूमि हेर्बल फ्लोर क्लीनर
फर्स को साफ बनाता है तथा प्राकृतिक द्रव्यों के द्वारा फर्स को सुगंधित तथा कीटाणुओं से दूर रखता है।

नंदिनी गो-अर्क
नियमित रूप से उपयोग करने से दीर्घायु के साथ-साथ जीवन का स्तर बढता है।

क्षमा गौ उपले
यज्ञ, होम आदि में उपयोग करते हैं। हवा को स्वच्छ बनाते हैं।

भुवति गौ उपले की सलाख
यज्ञ, होम आदि में उपयोग करते हैं। हवा को स्वच्छ बनाते हैं।

अवनि धूप चूर्ण
दुआँ सारे कीटाणुओं से बचाता है।

धरणी अगर बत्ती
भूदेवी की समस्त अच्छाइयों से भरी।

धात्री सांभ्राणी कप्स
स्वास्थ्य के लिए अच्छा।

वैष्णवी धूप स्टिक्स
हवा को स्वच्छ बनाती है।

वाराही धूप कोन्स
चारों तरफ पवित्रता को बिखेरती हैं।

पृथ्वी विभूति
शिव का पवित्र द्रव्य।

दन्धिका हेर्बल टूथ पाउडर
दांतों तथा मसूडों का संरक्षण करता है।

हिरण्मयी हेर्बल फेस प्याक
चेहरे के रंग को अकर्षणीय बनाता है।

मही हेर्बल साबुन
चमडी को सुरक्षित रखता है।

कश्यपी हेर्बल सांपू
चमडी को सुरक्षित रखता है।

समाचार के लिए - 0877-2277777, 2233333

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग - २-३)

इसलिए हे अर्जुन! नपुंसकता को मत प्राप्त हो, तुझमें यह उचित नहीं जान पड़ती। हे परांतप! हृदय की तुच्छ दुर्बलता को त्याग कर युद्ध के लिए खड़ा हो जाओ।

श्री भगवान उवाच -
गीतासार मिदं शास्त्रं सर्व शास्त्र सुनिश्चितम्।
यत्र स्थितं ब्रह्म ज्ञानं वेद शास्त्र सुनिश्चितम्॥

(- गीता मकरंद, गीता का प्रभाव)

"श्री भगवान बोले - गीतासार शीर्षक यह शास्त्र, समस्त शास्त्रों के द्वारा निश्चित सिद्धांतों से युक्त है। उसमें वेदशास्त्रों के द्वारा सुनिश्चित ब्रह्मज्ञान विराजमान है।"

सप्तगिरि पाठकों के लिए सूचना

'सप्तगिरि' एक आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका है। सप्तगिरि के लिए आपका प्रेम अद्वितीय और असाधारण है। 'सप्तगिरि' ति.ति.दे. के और पाठकों के बीच एक पुल के जैसा काम कर रही हैं।

सप्तगिरि पत्रिका के दाम में परिवर्तन हुआ है।

स्वामी के आगमन की अनुभूति अपने ही घर में पाइए।

सप्तगिरि आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका के लिए चंदा भर कर...

श्रीहरि का अक्षर प्रसाद हर महीने स्वीकार कीजिए।

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

(हिन्दी, तमिल, कन्नड, तेलुगु, अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं में प्रकाशित हो रही है।)

चंदा का विवरण

एक प्रति - रु.20/-

वार्षिक चंदा - रु.240/-

जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) - रु.2,400/-

विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा - रु.1,030/-

दाम में परिवर्तन सितंबर - 2022 महीने से लागू हो गया है।
नये चंदादार पर ही ये परिवर्तन लागू होगा।

अन्य विवरण के लिए कृपया संपर्क करें -
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे. प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति - 517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।
दूरभाषा - 0877-2264363, 2264543.

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-५४ जून-२०२३ अंक-०१

विषयसूची

चातुर्मास व्रत के नियम	डॉ.वी.जगदीश	07
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	09
पूरी के जगन्नाथ-जगत् के नाथ	श्री अंकुश्री	12
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	18
गीता का मार्ग दर्शन	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	21
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	23
योग का वैज्ञानिक स्वरूप	डॉ.बी.ज्योत्स्ना देवी	25
श्रीवैष्णव संप्रदाय की मार्गदर्शिका - भूमिका	श्री कृष्णकुमार गुप्ता	31
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	33
वेदगणित में मौखिक गुणक पद्धतियाँ	डॉ.वी.जगदीश	36
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	39
उलूपी	डॉ.के.एम.भवानी	40
महर्षि पुलस्त्य	डॉ.जी.सुजाता	42
पपीता के स्वास्थ्य के लिए लाभ	डॉ.सुमा जोषि	44
आइये, संस्कृत सीखेंगे...!!	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	46
जून महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - परिश्रम का धन	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - एकादशी	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 11		52

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - वज्र, मोती व स्वर्ण कवच अलंकारों में श्री मलयप्पस्वामी।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री नम्मालवार। चित्रकार - श्री पी.शिव प्रसाद।

गौरव संपादक
श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी(एफ.ए.सी), ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।
- प्रधान संपादक

संपादकीय

मानव के विकास में 'योग' का योगदान

भारतीय धर्म-आध्यात्म क्षेत्र में योग का महत्वपूर्ण स्थान है। यज्ञ शक्ति-संचय के द्वारा देवताओं को संतुष्ट करनेवाली प्रक्रिया है तो योग मनुष्य के अंतर्निहित शक्तियों को प्राप्त करने की साधना है। दोनों ईश्वरानुग्रह और साधना से ही संभव है। प्रत्येक प्राणी में परमात्मा को देखने की भारतीय आध्यात्मिकता ने योग को ईश्वरीय प्राप्ति और आध्यात्मिक शक्ति संचय के महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में स्वीकार किया है। हमारे ऋषी, मुनि ही नहीं साक्षात शिव भगवान भी योग साधना से ही शक्तिसंचय तद्वारा ब्रह्मानंद को प्राप्त करते दर्शन देते हैं। योग इसलिए भारतीयों की अत्यंत प्राचीन साधना है। परमात्मा को सर्वत्र देखनेवाली भारतीय धार्मिक साधना ने मनुष्य के अंदर की शक्तियों को पहचानने और पाने के लिए योग को एक विद्या (शास्त्र) के रूप में विकसित किया है। स्वस्थ्य मानव के विकास के लिए इसे अनिवार्य भी बताया है। आज के भागदौड, अनुशासनहीन और व्यायाम हीन जीवन में योग का महत्व और भी अधिक हो गया है।

योग का शाब्दिक अर्थ 'जोडना' है। मन और शरीर को जोडना योग है। तद्वारा शरीर और मन को स्वस्थ्य रखना है। क्योंकि स्वस्थ्य शरीर में ही भगवान बसता है। शरीर के लिए व्यायाम, उच्वास-निच्वास और मन के लिए ध्यान की आवश्यकता होती है। इन तीनों को एक सूत्र में बांधना ही योग है। इस में आसन की प्रक्रिया के साथ साथ सांस और ध्यान को भी महत्व दिया जाता है। योग आसन, प्राणायाम, मुद्रा, बंध, षट्कर्म और ध्यान के अभ्यास के माध्यम से प्राप्त होता है। इस योग से हमारे शरीर के अंग, मांसपेशियाँ और नसों के काम को संतुलन करने का कारण बन जाता है। कुछ प्रकार की भंगिमाएँ आसन के द्वारा अंतःस्रावी तंत्र में उत्तेजित होकर सभी प्रणालियों के अनुसार काम करने की व्यवस्था को प्रभावित करती हैं।

गहराई में जाने पर योग के भी हमारे ऋषि-मुनियों ने अनेक प्रकार बताये हैं। राजयोग, कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग, अष्टांग योग आदि इसी प्रकार के योग हैं। अष्टांग योग सूत्रों के अनुसार यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारण, ध्यान, समाधी... सूत्रों के अनुसार योग गुरु के माध्यम से शुरू करे, तो चित्त को एकाग्र करके ईश्वर में लीन करने का विधान को प्राप्त करने की शक्ति प्राप्त होती है।

ईश्वरोपासना के मार्गों में एक वैष्णव संप्रदाय में भी योग को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। जन्मतः गूंगे और अचेतन आल्वार भक्त और 'नालाइर दिव्य प्रबंध' के अग्रणी आल्वार कवि नम्माल्वार ने योग के द्वारा ही भगवान श्री महाविष्णु के दिव्य संदेश को प्राप्त किया। अपनी दिव्य-वाणी पाशुरों के द्वारा समस्त मनुष्यों को भक्ति-प्रपत्ति की ओर उन्मुख होने का सरल मार्ग बताया है। नम्माल्वार ने योग-साधना के द्वारा ही बारह आल्वारों में अग्रणी बन कर 108 दिव्य देशों के सार को जन-जन में प्रचार किया।

सर्वेजना सुखिनो भवंतु।

चातुर्मास व्रत के नियम

- डॉ.वी.जगदीश

हिंदू धर्म के पवित्र व्रतों में बेहद खास व्रत है चातुर्मास व्रत, वर्षा के मौसम में किया जाने वाला यह व्रत पवित्र है। वास्तव में यह चातुर्मास क्या है? कितने महीने होते हैं? किसके द्वारा पालन किया जाता है और किन नियमों का पालन किया जाना चाहिए और कई विषयों की जानकारी यहाँ हम देख सकते है।

चातुर्मास आषाढ़ शुद्ध एकादशी को श्री महाविष्णु योगनिद्रा में चले जाते हैं और फिर चार महीनों के बाद कार्तिक शुद्ध एकादशी को जागते हैं। चार महीनों की इस अवधि को ही 'चातुर्मास' कहा जाता है। इन चार महीनों के दौरान होने वाली पूजा, व्रत, दीक्षा आदि सभी को मिलाकर 'चातुर्मास व्रत' कहा जाता है। चातुर्मास व्रत एक ऐसा व्रत है जो हमारे भारत देश में प्राचीन काल से देव-देवताओं के द्वारा भी मनाया जा रहा है। कुछ लोग अपनी शक्ति के अनुसार केवल दो महीने तक ही इसका पालन करते हैं। इसलिए इसे अर्धचातुर्मास व्रत कहते है।

व्रत के नियम

यह व्रत जो आषाढ़ शुद्ध एकादशी से शुरू हो कर कार्तिक शुद्ध एकादशी तक चलता है, यह समय बहुत पवित्र है और किसी भी परिस्थिति में इसे अपवित्र नहीं होने चाहिए। जिन नियमों का पालन किया जाना चाहिए वह अत्यंत पवित्र होना चाहिए। अन्यथा इस व्रत का कोई अर्थ नहीं है। तो आइए हम जिन नियमों का पालन करना चाहिए उनमें से कुछ नियमों की जानकारी लेंगे...

1) सबसे पहले भोजन की बात करें तो श्रावण मास में साग, इमली, मिर्चि, भाद्रपद मास में दही, आश्वयुज मास में दूध, कार्तिक मास में द्विदल दाल की चीजें और कुछ तरिके सब्जियाँ भोजन में नहीं

लेना चाहिए। केवल पुरानी चौलाई का आचार को खाया जा सकता है।

2) इस व्रत को करते समय सूर्योदय से पहले उठकर स्नान करना चाहिए और फिर योगासन करना चाहिए। साथ ही पूजा करनी चाहिए।

3) व्रत संबंधित पूजा में पहले गणपति को निवेदन करना चाहिए फिर गौरम्मा को निवेदन करते हुए पूजा करनी चाहिए, तुलसी कोटा(मंदिर) पर दीप जलाना चाहिए और प्रत्येक भगवान को किसी एक प्रकार का नैवेद्य निवेदन करना चाहिए।

4) पूजा के बाद निरंतर भगवान का स्मरण करना चाहिए, जप-माला से जप करना चाहिए, भगवान का स्मरण करना चाहिए, यदि नहीं तो रामायण, भगवद्गीता, श्रीकृष्ण की लीलाओं जैसी कहानियों को सुनना चाहिए और साथ ही पसंदीया दिव्य मंत्रों को भी सुनना चाहिए।

5) व्रत के समय गाँव की सीमा पार नहीं करनी चाहिए।

6) पीठाधिपति एवं दीक्षार्थी एक ही स्थान पर हों तो एक दूसरे के व्रत से संबंधित कार्यक्रम करते रहना चाहिए।

7) व्रत के समय ब्रह्मचर्य का पालन करना अनिवार्य है।

ऐसा माना जाता है कि यदि आप इन नियमों का पालन करते हैं तो यह अत्यंत सफलता के साथ पूरा हो सकता है। यह व्रत लोक-कल्याण के लिए उपयोगी व्रत है। इस व्रत में वैयक्तिकता के साथ-साथ सामाजिक हित भी है। साथ ही पूजासामूहिक कार्यक्रम में भाग लेंगे। इससे शारीरिक और मानसिक रूप से व्यक्ति स्वस्थ्य रहता है।

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामिपुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. बगीचे : देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिन में विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

वनचर तोंडमान को भगवान के पास साथ ले जाने के लिए सहमत हुआ। श्यामकान्न बनाकर उसमें शहद मिलाया। आम के पत्तों का एक दोना बनाकर उसमें हरि के लिए प्रसाद रखा। तब जाकर तोंडमान और वनचर दोनों मिलकर हरि के पास पहुँचे। वहाँ वनचर ने उनको पुरुषोत्तम विष्णु भगवान को दिखाया। शंखचक्रधारी विष्णु को चिद्विलासी रूप में श्रीदेवी और भूदेवी के साथ देखकर प्रसन्न हुए। वे पीतांबर तथा शिर पर किरीट (मुकुट) पहने हुए थे। यहाँ भगवान प्रतिदिन स्कंद (सुब्रह्मण्य स्वामी) से भी अर्चित होते थे। उनके चरण कमल बिल में थे। शरीर का ऊपरी भाग ही दिखाई दे रहा था। निषाद(शिकारी) और राजा दोनों भगवान के सामने प्रणमित हुए। तोंडमान उस मूर्ति के दर्शन से आश्चर्यचकित होकर रह गये। उनकी आँखों से आनन्द अश्रु बहने लगे। निषाद ने श्यामकान्न भगवान को अर्पित किया। इसके बाद प्रसाद का आधा भाग राजा को दिया और बाकी आधा प्रसाद लेकर अपनी कुटी में पहुँचा। राजा भी साथ थे।

निषाद के यहाँ रात को राजा ने विश्राम किया। दूसरे दिन सुबह ही तोंडमान राजधानी के लिए रवाना हो गये। वे पुनः रास्ते में रेणुकादेवी के मंदिर में गये। देवी की पूजा की। मिष्टान्न और अन्य नैवेद्य अर्पित किये। घी के दीप जलाये। वे देवी की प्रार्थना कर ही रहे थे कि उनका एक सहायक अकस्मात वहाँ दौडता पहुँचा। उस पर देवी आयीं। राजा को संबोधित करते कहा- ''हे राजन्! आपका साम्राज्य अब स्थापित होगा। आप के नाम पर राजधानी की स्थापना होगी। आप उस पर शासन करेंगे। आप मेरे अपने हैं। मेरे भक्त हैं। आप को श्री वेंकटेश्वर की कृपा भी मिलेगी।''

अनुयायी के मुँह से देवी के वचन और अपने लिए विशिष्ट वरदान पाकर तोंडमान ने रेणुका देवी को नमन किया। शुक मुनि के आश्रम की ओर बढे। शुक महर्षि को नमन कर उनसे पद्मसरोवर माहात्म्य सुनाने की इच्छा उनके सामने प्रकट की। 'पद्मसरोवर' श्री शुकपुरी (यानी आज का तिरुचानूर) में है। श्री शुकपुरी को तिरुच्चुकनूर, तिरुचानूर, अलर्-मेल्-मंगापुरम् भी कहते हैं।

श्री शुक महर्षि ने राजा तोंडमान को पद्मसरोवर की गाथा इस प्रकार सुनाई- ''हे राजन्! युगों पहले श्री महालक्ष्मी और उनके पतिदेव श्री महाविष्णु दूर्वास महर्षि के कारण भूलोक में आ गये। यहाँ श्री महाविष्णु ने श्री महालक्ष्मी के साथ तपस्या की। उन्होंने दस हजार दिव्य वर्षों के लिए पद्मसरोवर के पास तपस्या की थी। इन्द्र आदि देवताओं ने श्रीहरि और श्रीलक्ष्मी को बहुत ढूँढा। यहाँ आकर उन्होंने श्री महालक्ष्मी और श्री महाविष्णु को एक साथ पाया। सब ने मिलकर प्रार्थना की- ''हे लक्ष्मी जी! आप ब्रह्म की माता हैं। इस समस्त विश्व की माता भी हैं। आप सागर तनया हैं। कृपा कर हम पर अनुग्रह कीजिए। ऋक्, यजुः और सामवेद की समन्वित ब्रह्म-विद्या मूर्ति हैं आप! आपकी कृपा से ही ब्रह्म जगत के सृष्टि-कार्य को संपन्न कर रहे हैं। रुद्र (शिव) विनाश कार्य में सफलता पा रहे हैं। आप हमारी ओर कृपा दृष्टि करिए।''

सबकी प्रार्थनाओं से प्रसन्न होकर श्री महालक्ष्मी ने कहा- ''हे देवता गण! आप अपनी शक्ति से ही असुरों का संहार कर सकेंगे। आप अपनी-अपनी जागहों पर वापस जाइए। जो मेरा स्तोत्र (प्रार्थना), मंत्र, जपते हुए मेरा स्मरण करेंगे, वे बेघर नहीं होते, वे घरवान बनेंगे। बिल्व पत्रों से मेरी पूजा-अर्चना करते हैं तो उनको धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सब पुरुषार्थ सरल होंगे। जो पद्मसरोवर में स्नान करेंगे और विष्णु धर्मचारिणी के रूप में मेरी आराधना करेंगे, उनको समस्त सुख-संपत्तियाँ, संपूर्ण जीवन और चरम आनंद तथा मोक्ष (परमानंद) मिलेंगे।'' इस प्रकार का वर प्रदान कर लक्ष्मी, विष्णु के साथ वैकुंठ की ओर चलीं।

शुक जी ने तोंडमान से आगे कहा- ''हे राजा! पद्मसरोवर की महत्ता भी सुनने योग्य है। यह मानवों के समस्त पापों का नाश करता है। इस सरोवर में जो पवित्र स्नान करके देवी का नाम स्मरण करता है, वह उनके अनुग्रह का तुरंत पात्र बन जायेगा। आप यहाँ अपने भाग्य से ही पहुँचे हैं। इसे अपना सौभाग्य समझकर पद्मसरोवर में पवित्र स्नान कीजिए। यहाँ स्नात होकर अपने यहाँ पहुँचना आपके लिए शुभकारी ही होगा।'' तोंडमान ने शुक के आदेश का पालन करते हुए पद्मसरोवर में स्नान किया। तत्पश्चात् अपनी नगरी में लौटे।

तोंडमान द्वारा अपने पिता का राज्य पाना

(वरा. पु. भा. 3, अ. 10, श्लो. 1-53)

शुक महर्षि के आश्रम से वापस लौटने के तुरंत बाद ही उनके पिता ने तोंडमान को युवराज घोषित किया। उसकी बुद्धि और शक्ति का परीक्षण तीन वर्ष पर्यन्त किया। तोंडमान को राज्याभिषिक्त कर सुवीर ने अपनी पत्नी नंदिनी सहित वानप्रस्त आश्रम स्वीकार किया। वे वन में चले गये।

निषाद(वनचर) वेंकटाद्रि पर श्यामक धान की फसल पैदा करता था। उसी से

बने अन्न में शहद मिलाकर भगवान को अर्पित करता था। एक दिन उसने पाया कि उसका खेत एक वराह से नाश किया जा रहा है। वह धान कुछ खाता और बहुत खराब करता था। निषाद ने उसके पदचिह्न देखे। धनुष-बाण लेकर उसके आने की प्रतीक्षा कर रहा था कि उसने हाथी के समान बहुत ही बडे वराह को खेत में आता देखा। वह बहुत नाराज हो गया। उधर वराह भी उतना हो क्रोधी बन गया। जोर से घुरघुराते आगे आया और निषाद ने भी उसे मारने धनुष संभाला। लेकिन शीघ्रता से वराह, वल्मीक में घुस गया। क्रुद्ध होकर निषाद ने वल्मीक को खोदा। वराह देव बाहर आये तो तुरंत निषाद मूर्छित हो जमीन पर गिरा। उसका पुत्र पास ही था। उसने वराह से प्रार्थना की। अपने पिता को क्षमा करने के लिए कहा।

वराह निषाद पर आवाहित हो गये और उसके मुँह से घोषित किया- ''मैं वराहदेव हूँ। मैं हमेशा इस चींटियों के बिल में रहता हूँ। तोंडमान को मेरा यह आदेश सुनाओ। मुझे इसी जगह पर प्रतिष्ठित करना है। यहीं पर मेरी उपासना-प्रार्थना होनी है। पहले श्यामा गाय के दूध से मुझे अभिषेकित करना है। उस राजा को मेरी आज्ञा सुनाओ। इस के बाद एक काला पत्थर मिलेगा। उसे पाकर उससे भूदेवी सहित वराह मूर्ति को बनाना है। भूदेवी को मेरी वाम जंघा पर बिठाना है। इसके बाद उस मूर्ति को धार्मिक अनुष्ठानों के साथ प्रतिष्ठित करना है। हर दिन दो समयों पर उसकी पूजा-अर्चना होनी है। इसके बाद इसी प्रकार का कार्यक्रम श्रीनिवास (विष्णु) के लिए भी संपन्न करना है। श्रीनिवास का विग्रह मेरे दक्षिण पार्श्व में एक और बिल में प्राप्त होगा। उनका कपिला गाय के दूध से पहले अभिषेक संपन्न करना है। दूध से अभिषेक करते हुए उनके विग्रह को बिल से निकालना है। जब तक उनके चरणों का दर्शन न हो तब तक उनका अभिषेक क्रम चलता ही रहना होगा। उनको पवित्र नैवेद्य भी अर्पित करना है। हर दिन उनकी पूजा-अर्चना चलनी है। प्राकारों का, मंदिर का, विमान का निर्मण भी तोंडमान को कराना है। यह मेरा आदेश है। जाकर राजा तोंडमान को बताओ।''

इस प्रकार की घोषणा के बाद निषाद के शरीर से वराह स्वामी निकल गये। निषाद अपनी पूर्व स्थिति पा गया। स्वस्थ हो गया। वनचर के पुत्र ने घटना की पूरी बात अपने पिता को सुनायी। तुरंत ही निषादाधिपति वसु अपने सहयोगियों के साथ तोंडमान की राजधानी गया। राजा को पूरा वृत्तांत सुनाया। वराह स्वामी का आदेश भी सुनाया। फिर अपने स्थान पर वापस आ गया।

इस पर राजा तोंडमान ने अपने मंत्रियों को बुलाया। वराह स्वामी के आदेश सुनाये। उनको आज्ञाएँ दी कि अगले दिन ही वेंकटाचल पर जाने के लिए तैयारियाँ की जाय। अपने यहाँ के गोपालकों को भी आदेश दिया कि राज्य में मिलनेवाली श्यामा और कपिला गायों को इक्कट्ठा करके वेंकटाद्रि ले आयें। अपनी रानियों को शुभ समाचार दिया। उनसे भी कहा कि वे भी वेंकटाचल जाने के लिए तैयार हो जायें।

क्रमशः

पूरी के जगन्नाथ जगत् के नाथ

- श्री अंकुश्री

मंदिरों की बहुलता और उसकी विशेषता भारत देश की पहचान है। हमारे यहाँ ऐसे अनेक मंदिर हैं, जहाँ आश्चर्यों की विविधता देखने को मिलती हैं। भारत के दक्षिण-पूर्व में बंगाल की खाड़ी के किनारे ओडिसा राज्य में भगवान जगन्नाथ का मंदिर है। यह मंदिर पूरी में अवस्थित है। यह कोसों में फैला हुआ क्षेत्र है। जगन्नाथ मंदिर के कारण नगर का नाम जगन्नाथपुरि है, जो पूरी नाम से जाना जाता है। पूरी भगवान जगन्नाथ के मंदिर और वहाँ से निकलने वाली रथ-यात्रा के लिए जाना जाता है। पूरी के मंदिर में भगवान जगन्नाथ, उनकी बहन सुभद्रा और भाई बलभद्र की मूर्तियाँ स्थापित हैं। तीनों मूर्तियाँ काष्ठ की हैं।

भगवान बदरीनाथ में थे और वहाँ से रामेश्वरनाथ गए। वे द्वारकानाथ होते जगन्नाथपुरि में आकर बस गए। पूरी में भगवान सदेह उपस्थित हैं। इसलिए ये जगत् के नाथ अर्थात् जगन्नाथ बन गए। जगन्नाथपुरि को धरती का वैकुंठ कहा जाता है। पूरी का जगन्नाथ मंदिर भगवान श्रीविष्णु के आठवें अवतार श्रीकृष्ण को समर्पित है। आदिशंकराचार्य ने देश में चार धामों की स्थापना की थी- उत्तर में बद्रीनाथ, पश्चिम में द्वारकानाथ, दक्षिण में रामनाथ और पूर्व में जगन्नाथ। देश के चार पीठों में एक गोवर्धन पीठ पूरी में अवस्थित है।

जगन्नाथपुरि की मूर्तियों की एक विशेष पहचान है कि इनके पैर नहीं हैं। हाथ भी बिलकुल छोटे और अविकसित हैं, यह विशेषता तीनों मूर्तियों में नहीं सिर्फ श्रीकृष्ण और भाई बलराम की मूर्तियों में हैं। बहन

सुभद्रा के हाथ है ही नहीं। राधा और कृष्ण की मूर्तियाँ देश के हजारों मंदिरों में देखी जा सकती हैं। मगर श्रीकृष्ण अपने भाई और बहन के साथ मात्र इसी मंदिर में विराजमान हैं। यह बात अलग है कि इस मंदिर की प्रतिमूर्ति अब देश-विदेश में कई जगह बन गई है।

कहा जाता है कि भगवान एक बार बारिश में भींग कर अस्वस्थ हो गए तो मौसी के घर चले गए। उनके साथ बहन सुभद्रा और भाई बलराम भी गए थे। वे अलग-अलग रथ पर सवार होकर मौसी के घर गए थे। उसी प्रसंग में हर वर्ष यहाँ रथ यात्रा निकाली जाती है। वे प्रति वर्ष करीब चार किलो मीटर दूरी पर रानी बगीचा में स्थित मौसी बारी के यहाँ जाते हैं और वहाँ आठ दिन रह कर वापस अपने घर आ जाते हैं। जगन्नाथ के परम भक्त राजा इंद्रद्युम्न की पत्नी गुंडीचा को भगवान की मौसी कहा जाता है। गुंडीचा का मंदिर कलिंग वास्तुकला में बना हुआ है, जो बहुत सुंदर दिखता है। वे रथ में सवार होकर मौसी के यहाँ जाते-आते हैं, इसलिए उनकी यात्रा को रथ यात्रा कहा जाता है। उनकी रथ यात्रा विशाल उत्सव के रूप में मनायी जाती है, जिसमें लाखों श्रद्धालु शामिल होते हैं।

भगवान जगन्नाथ अपने घर अर्थात् जगन्नाथ मंदिर से एक बार और बाहर

निकलते हैं। उन्हें जन्मदिन के अवसर पर ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को मंदिर के गर्भगृह से निकाल कर बाहर लाया जाता है। उस दिन उन्हें एक सौ आठ घड़ों के जल से स्नान कराया जाता है। उन्हें अच्छी तरह सजा कर भक्तों के दर्शनार्थ मंदिर के बाहर रखा जाता है।

रथ यात्रा के दौरान तीनों मूर्तियों को अलग-अलग भव्य रथों पर बैठाया जाता है। उन रथों के नाम भी अलग-अलग हैं। भगवान जगन्नाथ के रथ को नंदीघोष, बहन सुभद्रा के रथ को दर्पदलन और भाई बलराम के रथ को रक्षतल कहा जाता है।

तीनों रथ अच्छी तरह सुसज्जित रहते हैं और उनमें मोटा रस्सी बंधा होता है। रथ यात्रा नगर के प्रमुख मार्गों और बाजारों से होकर गुजरती है। श्रद्धालु रस्सी के सहारे रथ को खींचते हैं। रथ खिंचने के लिए श्रद्धालुओं में होड़ लग जाती है। रथ या उससे बंधी मोटी रस्सी को छूने के लिए लोग तरसते हैं। इतनी अधिक भीड़ रहती है कि बहुत सारे लोग मात्र तमाशबीन बन कर रह जाते हैं। इच्छा रहते हुए भी वे रथ तक नहीं पहुँच पाते हैं। जिनको रथ खिंचने का अवसर मिल जाता है वे अपने को धन्य मानते हैं। यहाँ के माहौल और श्रद्धालुओं को देख कर लोग धर्म और आस्था के प्रति नतमस्तक हो जाते हैं और उनके मन में भक्ति की गंगा बहने लगती है तथा उनमें आध्यात्मिक चेतना जागृत हो जाती है। जगन्नाथपुरि का मंदिर वैष्णव संप्रदाय का है। देश के दूसरे कई वैष्णव मंदिरों में भी भगवान की रथ यात्रा निकालने की परंपरा शुरू हो गयी है। जगन्नाथपुरि की रथ यात्रा विश्व का सबसे प्राचीन धार्मिक उत्सव है, जो आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को शुरू होती है। वर्ष २०२३ की रथ यात्रा २० जून, मंगलवार को है। उस दिन देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु पूरी पहुँच कर अपने को धन्य बनाते हैं।

धार्मिक स्थलों की श्रद्धापूर्वक की गई यात्रा भक्तों के लिए यादगार बन जाती है। जगन्नाथपुरि में भगवान के दर्शन और रथ यात्रा को देखने वालों के मानस-पटल पर उसका दृश्य उसी तरह अमिट हो जाता है जिस तरह तिरुपति बालाजी के एक बार दर्शन करने वाले के मानस पटल से वहाँ की छाप नहीं हट पाती है।

जगन्नाथपुरि मंदिर ओडिसा राज्य की राजधानी भुबनेश्वर से साठ किलोमीटर की दूरी पर है। ओडिसा का प्राचीन नाम उत्कल था और दो दशक पूर्व तक इसे उड़ीसा कहा जाता था। जगन्नाथपुरि को श्रीक्षेत्र, श्रीपुरुषोत्तमक्षेत्र, शाकक्षेत्र, नीलांचल और नीलगिरि भी कहा जाता है। इस मंदिर के निर्माण की कहानी बडा रोचक है।

मंदिर का निर्माण दो शताब्दी ई. पूर्व हुआ था। यह मंदिर सातवीं शताब्दी का है जिसका पुनर्निर्माण कलिंग राजा अनंत वर्मनदेव के द्वारा कराया गया था और इसका जीर्णोद्धार सन् 1174 में ओड़िसा के राजा अनंग भीमदेव ने करवाया था। हालांकि उस समय मंदिर बनने से सैकड़ों वर्ष पूर्व से तीनों प्रतिमाओं की पूजा-अर्चना होती आ रही है। मंदिर का प्रामाणिक इतिहास महाभारत के वनपर्व में मिलता है। यह मंदिर पाँच कोस यानी सोलह किलोमीटर क्षेत्र में फैला है। बताते हैं कि दो कोस का क्षेत्र समुद्र में समा गया है। मंदिर की ऊँचाई 215 फीट है, जो 20 फीट ऊँची दीवारों से घिरा है। यहाँ गैर-हिंदुओं का प्रवेश वर्जित है।

भगवान जगन्नाथ सबर जनजाति के देवता हैं। सबर कबीले के लोग काष्ठ की मूर्तियाँ बना कर उसकी पूजा करते थे। जगन्नाथपुरि में आज भी ब्राह्मण के साथ ही सबर जनजाति के पुजारी पूजा कराते हैं। भगवान के जन्मदिन ज्येष्ठ पूर्णिमा से लेकर आषाढ़ पूर्णिमा तक सबरजाति के पुजारी यहाँ की सारी रीतियों का निर्वहण करते हैं। सबर जाति के पुजारी को दैतापति कहते हैं। कहा जाता है कि सबर जनजाति के विश्ववसु ने सबसे पहले नील माधव रूप में इनकी पूजा की थी। उन्होंने इनकी मूर्ति को नीलांचल पर्वत की गुफा में छिपा कर रख दिया था।

कथा प्रचलित है कि भगवान ने मालवा के राजा इंद्रद्युम्न को स्वप्न में दर्शन देकर कहा कि नीलांचल गुफा से उनकी नील माधव रूप की मूर्ति को निकाल कर एक नये मंदिर में स्थापित करें। राजा ने अपने सेवकों को नीलमाधव की खोज में लगाया। मगर नीलांचल गुफा का किसी को पता नहीं चल पा रहा था। सेवकों में विद्यापति नामक एक ब्राह्मण सेवक भी था। उसने विश्ववसु की बेटी से विवाह कर लिया और उसके माध्यम से नीलांचल गुफा का पता लगा लिया। उसने नीलमाधव की मूर्ति को गुफा से निकाल कर राजा को दे दिया। कबीले के देवता की मूर्ति गुफा से चोरी हो जाने पर विश्ववसु बहुत दुखित हो गया। वह इतना दुखी हो गया कि उसका दुख देख कर भगवान पुनः गुफा में वापस आ गए।

भगवान ने राजा इंद्रद्युम्न से कहा कि वे एक विशाल मंदिर का निर्माण करा कर उसमें उनकी नयी मूर्ति को स्थापित करावें। उन्होंने कहा कि एक बड़ा काष्ठ द्वारका से बहता हुआ पूरी के समुद्र के तट पर आ रहा है। उन्होंने उसी काष्ठ से उनकी मूर्ति निर्मित करने का आदेश दिया। देखा गया कि समुद्र तट पर एक बड़ा काष्ठ बह कर आया हुआ है। उस काष्ठ को उठा कर लाने का प्रयास किया गया। मगर कई लोग मिल कर भी उसको नहीं उठा पाए। यह बात जब विश्ववसु को पता चली तो वह अकेले ही उस बड़े और भारी काष्ठ को उठा कर मंदिर तक ला दिया।

राजा ने कारीगरों को उस काष्ठ से मूर्ति निर्माण करने के लिए कहा। कारीगर लोग आरी, छेनी और हथौड़ी लेकर काम में लग गए। मगर कारीगर उस काष्ठ पर अपनी एक छेनी भी चोट नहीं कर पाए। जब वे छेनी चलाते थे, वह छिटक कर गिर जाती थी। कारीगर थक गए और राजा परेशान हो गए। तभी कहीं से एक बूढ़ा कारीगर ने आकर कहा कि वह मूर्ति बना देगा। राजा

को पता नहीं था कि वह बूढ़ा ब्राह्मण साक्षात् भगवान विश्वकर्मा हैं। उन्होंने मूर्ति बनाने के लिए इक्कीस दिनों का समय माँगा और शर्त रखी कि वे बंद कमरे में ही मूर्ति बनाएँगे तथा उस दौरान कमरे को न कोई खोलेगा और न कोई उसमें झाँकेगा। वे बंद कमरा के अंदर मूर्ति बनाने लगे। बाहर छेनी-हथौड़ी की आवाज सुनाई दे रही थी। इक्कीस दिन की अवधि से पहले ही कमरे से आवाज आना बंद हो गयी। राजा इंद्रद्युम्न की रानी गुंडीचा को शँका हुई कि बूढ़ा कारीगर अंदर मर गया है। उन्होंने यह बात राजा को बतायी। यह सुन कर राजा घबरा गए। उन्होंने कमरे का दरवाजा खोलवा दिया। अंदर बूढ़ा कारीगर गायब था और तीन अर्द्ध निर्मित मूर्तियाँ पड़ी हुई थीं। भगवान नीलमाधव और उनके भाई बलभद्र के छोटे-छोटे हाथ बने हुए थे, मगर सुभद्रा के हाथ नहीं थे। किसी भी मूर्ति के पैर नहीं थे। राजा ने ईश्वर की इच्छा मान कर मूर्तियों को उसी रूप में मंदिर में स्थापित करा दिया। प्रत्येक बारह वर्षों पर यहाँ की मूर्तियाँ बदल दी जाती है। मुख्य मंदिर के आसपास छोटे-बड़े तीस और मंदिर हैं।

मंदिर की चार दिशाओं में चार द्वार हैं। पूर्व दिशा में सिंह द्वार है, जिससे आम जन प्रवेश करते हैं। दक्षिण दिशा में असुर द्वार है, जिससे अभी विशिष्ट जनों को प्रवेश कराया जाता है। पश्चिम दिशा को हाथी द्वार कहा जाता है, जिससे पुजारी लोग प्रवेश करते हैं। उत्तर दिशा में व्याघ्र द्वार है, जिससे विकलांग और बीमार लोगों को प्रवेश दिलाया जाता है।

सिंहद्वार से प्रवेश करने पर एक स्तंभ मिलता है, जिसका दर्शन करने के बाद आगे बढ़ा जाता है। पहले विश्वनाथ मंदिर मिलता है। भगवान विश्वनाथ के दर्शन करने के बाद भगवान जगन्नाथ के दर्शन किया जाता है तभी दर्शन का पूरा लाभ मिलता है। गर्भगृह में ऊँचे मंच पर तीनों मूर्तियाँ सुशोभित हैं। दाहिनी ओर भगवान जगन्नाथ, बीच में बहन सुभद्रा और बाईं ओर भाई बलभद्र की मूर्ति है। मुख्य मंदिर में दर्शन करने के बाद बाहर के तीस मंदिरों में अपनी श्रद्धा और सुविधा के अनुसार दर्शन किया जा सकता है। पूरी में अध्यात्म, कला, इतिहास और परंपरा का संगम दिखाई देता है।

समुद्र की लहरों से टकरा कर मंदिर क्षतिग्रस्त नहीं हो जाए इसके लिए भगवान जगन्नाथ ने हनुमानजी को समुद्र को नियंत्रित करने का भार दे दिया। वे समुद्र की निगराणी तो करने लगे, मगर भक्तिविह्वलता में वे कभी-कभी भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा के दर्शन के लिए चले आते थे। वे तो जाते ही थे, समुद्र भी उनके पीछे-पीछे नगर में प्रवेश कर जाता था। इससे नगर और मंदिर को समुद्र से खतरा उत्पन्न हो जाता था। इस आदत से परेशान होकर भगवान जगन्नाथ ने महाबली हनुमानजी को स्वर्ण बेड़ियों से जकड़ दिया। हनुमानजी उसी रूप में समुद्र तट के मंदिर में आज भी दर्शनीय हैं।

कई धार्मिक स्थलों या धार्मिक आयोजनों पर कुछ ऐसी असामान्य बातें देखी-सुनी जाती हैं, जिस पर सहज विश्वास नहीं होता और विज्ञान वहाँ मौन हो जाता है। जगन्नाथपुरि मंदिर में भी अनेक आश्चर्यजनक बातें देखने-सुनने को मिलती हैं। उसके उदाहरण देखे जा सकते हैं।

1) मंदिर के गुंबज के ऊपर लाल रंग का ध्वज लहराते रहता है, जिस पर भगवान शिव के सिर वाला चँद्र अंकित है। यह ध्वज जिधर से हवा आती है उसी दिशा में लहराता है, उसकी विपरीत दिशा में नहीं। अर्थात् पश्चिम से हवा बहने पर ध्वज का मुँह पश्चिम की ओर रहता है, न कि पूर्व की ओर।

2) यहाँ मंदिर का ध्वज प्रति दिन संध्या के समय बदल दिया जाता है। ऐसा करने में एक दिन भी चूक होने पर अठारह वर्षों तक मंदिर बंद हो जाएगा।

3) गुंबज के ऊपर अष्टधातु का सुदर्शन चक्र लगा हुआ है। आश्चर्यजनक बात यह है कि मंदिर परिसर में कहीं से भी खड़ा होकर देखने वाले को सुदर्शन चक्र उसके सामने दिखाई देता है।

4) मंदिर के पास हवा का रूख दिन में समुद्र की ओर और रात्रि में मंदिर की ओर रहता है।

5) मुख्य गुंबज की छाया किसी मौसम में कभी भी जमीन पर नहीं पड़ती है।

6) मंदिर के महाप्रसाद को गोपाल भोग कहा जाता है। यहाँ जितने भी श्रद्धालु पहुँचते हैं सबको भर पेट भोजन उपलब्ध हो जाता है।

7) समुद्र के ज्वार-भाटा की आवाज दूर-दूर तक सुनाई पड़ती है। मगर इस मंदिर के परिसर में कदम रखते ही समुद्र से आने वाली आवाज सुनाई देना बंद हो जाती है।

8) मंदिरों के ऊपर पक्षियों का उड़ते रहना सामान्य बात है। मगर जगन्नाथपुरि मंदिर के गुंबज के ऊपर न तो कोई पक्षी बैठता है और न आसपास पड़ता ही है।

9) मंदिर का महाप्रसाद पाँच सौ रसोइए और तीन सौ सहयोगियों के द्वारा लकड़ी के चूल्हे पर बनाया जाता है। मिट्टी की सात हाँडी एक के ऊपर एक रखकर महाप्रसाद बनाया जाता है। आश्चर्यजनक बात यह है कि ऊपरी हाँडी का चावल सबसे पहले पकता है और नीचे वाली हाँडी का सबसे बाद में।

आगंतुकों को यहाँ का महाप्रसाद चावल(भात) अवश्य ग्रहण करना चाहिए। यहाँ की प्रसिद्ध मिठाई खाजा है, जिसे लोग प्रसाद के रूप में लेकर जाते हैं। जगन्नाथपुरि मंदिर राष्ट्रीय उच्चपथ संख्या 203 पर अवस्थित है। पूरी का संपर्क बिंदू भुबनेश्वर है, जहाँ रेल, सड़क या वायु मार्ग से पहुँचा जा सकता है। बाहर कहीं से पूरी के लिए सीधी रेल सेवा नहीं मिलने पर भुबनेश्वर पहुँच कर वहाँ से पूरी के लिए रेल पकड़ी जा सकती है। पूरी रेल्वे स्टेशन से मंदिर की दूरी दो किलो मीटर है, जहाँ टैक्सी या ऑटोरिक्शा से जाया जा सकता है। भुबनेश्वर एअरपोर्ट शहर से चार किलोमीटर की दूरी पर है। पूरी जाने के लिए एअरपोर्ट पर बस और टैक्सी उपलब्ध होती है। भुबनेश्वर से पूरी की दूरी साठ किलोमीटर है, जिसे रेल, बस या टैक्सी से तय किया जा सकता है। लोग साल भर पूरी की यात्रा करते हैं। मगर गरमी से बचने के लिए अक्तूबर से मार्च के बीच का समय अधिक उपयुक्त है।

मंदिर से निकलने पर संध्या से पूर्व दो किलोमीटर दूरी पर समुद्र का आनंद लिया जा सकता है। पूरी के समुद्र तट को सुंदरपुरी तट कहते हैं। दर्शनीय अनेक स्थलों में बीस किलोमीटर दूरी पर साक्षी गोपाल मंदिर और पैंतीस किलोमीटर दूरी पर कोणार्क के सूर्य मंदिर है। कोणार्क मंदिर अपनी वास्तुकला और नक्कासी के लिए विश्वप्रसिद्ध है, जिसका निर्माण राजा नरसिंहदेव ने तेरहवीं शताब्दी में करवाया था। पूरी से पचास किलोमीटर दूरी पर दक्षिण-पश्चिम में चिलका झील है, जिसे भारत की सबसे बड़ी झील होने का गौरव प्राप्त है।

भगवान जगन्नाथ का ध्यान करके जो श्रद्धालु यहाँ पहुँचते हैं, उनकी यात्रा सफल होती है और वे अपने हिस्से का पुण्य बटोर कर यहाँ से आनंदपूर्वक लौटते हैं।

बलभद्र सुभद्राभ्याम् जगन्नाथय ते नमः।

(गतांक से)

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

द्वितीय आश्वास

तेलुगु मूल

मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद

आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

तब अगस्त्य मुनि ने कमलाक्ष को प्रणाम करके इस रूप में कहा। ''बहुत उत्साह के साथ उस मूर्ख दशकंठ धरती पर मनुष्यों को बहुत नुकसान पहुँचा रहा है। जनों की दीन दशा को मैं देख नहीं पा रहा हूँ। इसलिए आप के पास आया। इसी कारण से आप के यहाँ चले आया। हे ईश्वर! अब आप ही उस दसकंठ को मार कर प्रजा की रक्षा कीजिए।'' कहते मुनिवर ने विनति की। यह सुन कर श्रीहरि हँस कर सनकसनंदादि महायोगियों की ओर देखकर ''आप आदि योगी हैं, सदा आनंद में विचरण करनेवाले हैं, आप के यहाँ आने का कारण क्या है?'' पूछने पर उन्होंने इस रूप में कहा। ''हे महात्मा! आप के सद्विग्रह को आंतरिक ज्ञानचक्षु से सदा आनंद का अनुभव करनेवाले हम ने कर्माक्ष को होनेवाली भ्रांति से यहाँ पर आये हैं हे परमोपदेशा!'' इस रूप में सनकसनंदादि योगियों ने आत्म रहस्य विचार लक्षणों के साथ योग मार्गरति सूक्तियों के साथ विनति करने पर सुनकर प्रसन्न होकर श्रीहरि इंद्र को देख कर ''आप यहाँ पर क्यों आये हैं? हमें बताइए।'' कहने पर इंद्र ने ऐसा कहा। ''हे यज्ञेश! हे यज्ञांग! हे यज्ञ भावना! यज्ञ कर्म फलप्रद! निर्मलात्मा! माधव! हमारा पितामह, अगस्त्य की विनति की तरह अवनि में रावण दुरात्मा बन कर हमें बहुत सता रहा है। श्रीगिरि प्रदेश में मुनि, मनुष्यादि पर मूर्ख बन कर हिंसा कर रहा है। उसे मारनेवाला कोई नहीं है। हे देव! शीघ्र ही उसे मार कर सकल जन, मुनिगण और हमारी रक्षा कीजिए। ऐसी शक्ति और युक्ति सिर्फ आप के ही पास है। इसलिए हम सब क्षीरसागर के पास आप की खोज करते करते वहाँ आप को न पाकर फिर इन गिरियों में खोज खोज कर, तीन लोक और वैकुंठ में भी आप को न पाकर अब आप के चरणों में आ पहुँचे हैं। आप के दर्शन से हमारी चिंता मिट गयी है। आप भूत दयालु हैं। पापात्मा उस रावण को मार कर हमारी रक्षा कीजिए हे मुकुंदा! क्षीरसागर को छोड कर, श्रीवैकुंठ से विरक्त होकर, इस शेषाचल पर आप क्यों बसे हैं? आप किसी को भी दिखाई नहीं पड रहे हैं। इस का क्या कारण है? आप के इसी लोक में होते इस

लोकवासियों को रावण कैसे सता सकता है? दुष्टों का संहार करके शिष्टों की रक्षा कीजिए। हे महनीय! स्वकीर्ति आप को प्राप्त होगी। हे परमपुरुष! हमें पहले की तरह अपनी शरण में लीजिए। अवतार लेकर दशकंठ का संहार कीजिए।'' प्रणाम करते ऐसी विनति की। इंद्र की बातों को सुन कर ब्रह्मादि को देखकर श्रीहरि ने इस रूप में कहा। ''हे ब्रह्मादि जन! आप की सत्कृपा के अनुसार ही आप की रक्षा मैं ही करूँगा। दुष्ट रावण का काल आने दीजिए। अत्यंत बल के साथ सागर को पार करके दशकंठ का यहाँ पहुँचना संभव नहीं है। आप सब यहाँ निश्चिंत रहिए।''

हर के द्वारा हरि से विनति :

इस रूप में श्रीहरि के कहते समय शिव भगवान ने वहाँ पर आकर इस प्रकार कहा। ''हे कमलेश! वैकुंठ पुर को छोड कर धरती के शेषाचल पर रहते हुए मनुष्यों के कष्ट-दुर्दशाओं को दूर न करके यहाँ क्यों छिपे हुए होंगे? शायद आप धरती पर मनुष्यों के संकटों को दूर करने के लिए शेषाचल पर वास करते यहाँ जनों को प्रत्यक्ष होकर रहने से यहाँ पर राक्षस नहीं आ पायेंगे। उन के यहाँ न आने से मानव सब आप की सेवा करते रहेंगे। ऐसा यह पर्वत आप के लिए भूलोक वैकुंठ बनेगा। अब आप इसे मत छोडिए। मैं भी इसी धरती पर रहना चाहता हूँ। मेरे लिए अनुकूल स्थल शीघ्र ही बताइए। हम दोनों इसी पर वास करेंगे।'' हर के इस रूप में कहने पर हरि ने हँस कर कहा। ''हे परमेश! आप के यहाँ रहना मेरे लिए सम्मति है। इस महान पर्वत श्रृंखला के नीचे की ओर आप वास कीजिए। आप की रक्षा में प्रजा भक्ति से आप की पूजा करते रहेंगे। आप यह काम कीजिए।'' हरि की इन बातों को हर ने स्वीकार किया। हरि और हर के इस रूप में धरती पर रहने के निर्णय से ब्रह्मादि देवताओं और मुनिवरों को बहुत आनंद हुआ। तब दशरथ को देखकर श्रीहरि ने कहा। ''हे दशरथेश! आप तापसियों के साथ मिल कर यहाँ पर क्यों आये हैं? बताइए।'' यह सुन कर भक्ति से दशरथ ने श्री रमेश की ओर देखकर हाथ जोड कर अनेक प्रणाम करते विनय से विनति की है।

दशरथ के द्वारा श्रीहरि की स्तुति करना :

''हे विश्वकारण! हे विश्वात्मा! विष्णु देव! संततानंद विग्रह! चक्रपाणी! आप के दर्शन करने की इच्छा से आप की कृपा को प्राप्त करने के लिए आया हूँ। हे इंदिरेश! जिसे पाने के लिए ब्रह्मादि देवतागण तप करते हैं, जिनकी सूक्तियाँ सुनने के लिए मैं तैयार रहता हूँ। जिसके दर्शन के लिए मैं सदा तत्पर रहता हूँ। वे गुरु आप ही हैं। हे विष्णु देव! सकल विमत संहरण कारण! पुरत्रय को सृजित करने की शक्ति भी आप में ही है।

आप के प्रभाव के बारे में बताना ब्रह्म देव को भी संभव नहीं है? हे स्वामी! सृष्टि कर्ता भी आप की महाज्ञा की प्रतीक्षा करते रहते हैं। आप की आज्ञा के अनुसार देवतागण अपने अपने कर्तव्य निभाते रहते हैं। आप से बढ कर और कौन हैं? आप नाश रहित, अनादि प्रकाशवान, ऊर्ध्वलोक ही आप का निवास स्थान है। इसलिए आप की सर्वज्ञता के बारे में तत्वज्ञान से कुछ कहने में किसी को भी संभव नहीं है? हे देव देव! परमात्मा! दीन बन कर मैं एक विनति करूँगा। कृपया सुन लीजिए! आप के द्वारा प्रदत्त भूरी भाग्य मेरे पास बहुत हैं। वंश गौरव बढानेवाले पुत्र संतान ही नहीं है। इसलिए मुझे चिंता हो रही है। 'पुत्र संतान हीन को सत्पुण्य लोक प्राप्त नहीं होंगे' ऐसा वेद-शास्त्र कहते हैं। इसलिए मैं अत्यंत दुःखी हो कर आप की शरण में आया हूँ। आप के दिव्य चरणों में आया हूँ। इसलिए आप सम्मति से सत्य, धर्म, पराक्रम, शक्तिवान पुत्रों को वरदान के रूप में दीजिए। हे कमलनाथ!'' दशरथ के इस रूप में कहने के बाद श्रीहरि मन में आनंदित होकर इस रूप में कहा। ''हे भूप! जन्मांतर में घोर पाप आप ने किया था इसलिए आप को पुत्र संतान नहीं हुई।'' यह सुन कर दशरथ ने मन में लज्जित होकर शीघ्र ही धैर्य के साथ इंदिराधीश को देखते हुए पुनः कहा।

''हे नारायणाच्युत! अपने पूर्व जन्म में मेरे द्वारा किया गया पाप कितना भी हो सूर्य के उदय होने पर जिस रूप में अंधकार भाग जाता है। उसी रूप में आप के दर्शन मात्र से मेरे पाप सब दूर हो गए हैं। अब मैं पाप मुक्त हो गया हूँ। अब मेरे पापों के बारे में मत सोच कर मुझे पुत्र संतान प्रदान करके मुझ पर अनुग्रह करके मुझे पुण्यगति प्रदान कीजिए। यह वरदान आप ही दे सकते हैं। हे नीरजाक्ष! इस रूप में दशरथ के हरि के चरणों में समर्पित होकर महादीन बन कर खडे हो गए। तब स्वामी ने दशरथ की ओर देख कर अपने निर्हेतुक कृपा-कटाक्ष उस पर करते, वीक्षणमात्र से अमृत बिंदु उस नृपति पर बरसाया।

श्रीहरि के द्वारा दशरथ को वरदान देना :

''हे दशरथेश्वर! आप को चिंता करने का कोई कारण नहीं है। मैंने ही आप के सारे पापों को दूर करके तुम्हे कृतार्थ किया। अत्यंत बहुबल पराक्रमी धरती पर मेरे समान चार पुत्रों को दे दूँगा। मुझ पर विश्वास करके तुम अब अपने नगर वापस लौट जाओ। वहाँ तुम शीघ्र ही पुत्रकामेष्टि यज्ञ करो। चार श्लोकों में तुम ने मेरी जो स्तुति की है उससे मैं अत्यंत संतुष्ट हूँ। इसलिए मुख्य वरदान तुझे दे दिया है। अब तुम अपने राज्य लौट जाओ।'' श्रीहरि की इन बातों को सुन कर दशरथ ने श्रीहरि को नमन करके अनेक प्रकार से स्तुति करके फिर से उन से आज्ञा लेकर, ब्रह्मादि देवताओं को भी प्रणाम करके उन से भी वरदान प्राप्त करके अपने गुरु वशिष्ट समेत अयोध्या लौट आये। वहाँ पर उन्होंने पुत्रों की प्राप्ति के लिए पुत्रकामेष्टि करने लगे।

तब हरि ने ब्रह्म से कहा। ''हे जलजगर्भा! तुम अपना सत्यलोक छोड कर यहाँ रहना क्या उचित है? मैं कुछ समय के लिए इसी पर्वत पर रहूँगा। अब तुम अपना लोक चले जाओ।'' इन बातों को सुनकर ब्रह्म कुछ न कह कर सर झुका कर खडे रहे। फिर हरि ने ब्रह्म को इस रूप में देख कर कहा। ''हे पुत्र! तुम्हारे मन में जो इच्छा है मैं उसे पूरा करूँगा। तुम अपना सर उठाकर पूछ लो।'' यह सुन कर ब्रह्म ने हरि के पादपद्मों को नमस्कार करके विनति की।

क्रमशः

गीता का मार्ग दर्शन

- श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण

अत्यंत घोर विपत्कर परिस्थितियों में 'गीता' का आविर्भाव हुआ था। गीता का ही नाम ''भगवद्गीता'' है। भगवान श्रीकृष्ण साक्षात् ''गोलोक'' से अपने स्वस्वरूप लेकर द्वापरयुग की तारणा के लिए नंद गोकुल में जन्म लेकर आया था। नरसिंह, वामन, परशुराम, राम आदि अवतार हैं - भगवान श्रीमन्महाविष्णु के। अवतार में 'मूल-विराट' का रूप बदला हुआ होता है। लेकिन, श्रीकृष्ण का रूप, अवतार की तरह न होकर, यथातथ्य रूप था। इसी कारण से श्रीकृष्ण को ''भगवान'' कहा गया है और भगवान के द्वारा कहे हुए होने के कारण गीता को ''भगवद्गीता'' कहा गया है।

थोडे ही समय के पश्चात्, घोर मारण युद्ध आरंभ होने वाला था, जिस घोर मारण युद्ध में, जो 18 दिन ही चला था उस में 77 करोड वीर योद्धाओं की मृत्यु हो चुकी थी। यह पाँच हजार सालों के अंदर एक रिकॉर्ड है, जो अब तक तोडा नहीं गया है।

गीता एक जैविक उपदेश है, जो दो आत्म बन्धुओं के बीच हो चला था। वे दो आत्म-बन्धु श्रीकृष्ण और उसका साला अर्जुन थे। अर्जुन महावीर योद्धा था, जिसने अनेकानेक युद्ध किया था। लेकिन, फिर भी वह आज के अंतिम निर्णयात्मक घोर 'कुरुक्षेत्र-युद्ध' करने में नितांत डरा हुआ था और युद्ध करने के विरुद्ध में था, जो अर्जुन के लिए एक अनिवार्य कर्तव्य था। भगवान कृष्ण ने उस असमंजस वातावरण में कर्त्तव्य-विमुख अर्जुन को मानव जीवन की रूप रेखा देकर, उसे कर्त्तव्य - सुमुख बनाया था।

श्रीकृष्ण नारायण था और अर्जुन नर। नारायण, जो सृष्टि का मूलबीज था, के द्वारा नर के जीवनोपदेश का नाम ही ''भगवद्गीता'' है। भगवद्गीता में जीवन के कोणों का दर्शन व निर्देशन दिया हुआ मिलता है।

मनुष्य का स्वयं उद्धार

श्लोक :

उद्धरेत् आत्मना आत्मानं, न आत्मानं अवसादयेत्।
आत्मा एव हि आत्मनः बंधुः, आत्मा एव रिपुः आत्मनः।।

(गीता ६-५-६)

यहाँ भगवान गीतोद्धारक श्रीकृष्ण का नरों को संदेश है- ''साधक लोग अपने को आप ही उद्धार कर लेना चाहिए। आत्म उद्धार उनके लिए अभिलषणीय एक मात्र उत्तम तत्व है। आत्म उद्धार से अर्थात्, अपने आपके उद्धरण पर ही मनुष्य को निर्भर करना चाहिए। आत्मोद्धार का विस्मरण कर अपने आप को पतन व विनाश की दिशा में ढकेल देना आत्म-विनाश हेतु है। मानव को आत्म-विनाश अत्यंत अवांछनीय एक प्रवृत्ति है।''

गीता का उपदेश है -

''आदमी का परम मित्र अपने आप है और अत्यंत विनाशकारी शत्रु भी अपने आप है। मनुष्य में मित्र और शत्रु दोनों का भी स्थान होता है, जिस तथ्य को जानना उसके लिए अत्यंत आवश्यक है।

जो मनुष्य अपने को वश में रखने की शक्ति रखता है, वह सबका ''आत्म-सहायक या आत्म-बंधु'' बन सकता है।

जो आदमी अपने के वश में न होकर, अपने का विनाशकारी शत्रु बन जाता है, अपने की हानि कर लेने के साथ-साथ दूसरों के लिए भी हानि कारक बन जाता है।''

उत्तम आचरण का महत्व

श्लोक : *यद्यदाचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनाः।*
सयत् प्रमाणं कुरुते - लोकस्तदनुवर्त्त ते।।

उपरोक्त नीति श्लोक गीता शास्त्र के अत्युत्तम औपदेशिक श्लोक-राजों में एक है। इस श्लोक में मानव को आदर्शात्मक प्रतिरूप बनने का उपदेश दिया हुआ मिलता है।

कहा गया है - ''जो मनुष्य उत्तम आचरण का संस्कार पाया हुआ होता है, सो दूसरों के लिए आदर्शप्राय बना हुआ होता है। उत्तम आचरण साक्षात् दैवी गुण होता है। उत्तम आचरण से मनुष्य स्वच्छ बन जाता है और जो अपने विशुद्ध आचरण के द्वारा स्वच्छ बन जाता है, उसमें दैवी गुणों का आवास हो जाता है। आदमी अपने निराले संस्कारों के जरिये परमात्मा का विशुध्दांश बन जाता है।

ऐसे विशुद्ध मानवों को प्रामाणिक मान कर, लोग उनका अनुसरण व अनुकरण करना चाहिए। अर्थात् लोक उन्हीं का अनुसरण या उनके दिखाये पथ पर चलता है, जो मानव अनुसरणीय विशुद्ध अपना आचरण रखते हों।

स्वच्छ मानव जीवन अनुसरण योग्य बन जाता है।''

श्रीरामचन्द्रजी का जीवन काफी हद तक स्वच्छ है, जो अन्य लोगों के लिए अनुसरणीय बताया जाता है।

श्लोक : *दुःखेष्वनुद्विग्न मना, सुखेषु विगतस्पृहः।*
वीत, राग, भय, क्रोधः - स्थितधीर्मुनिरुच्यते।।

यह गीता का आचरणीय व अनुसरणीय काफी उत्कृष्ट एक उवाचा है। यह उपदेशात्मक वाक्य हर आदमी के लिए प्रथम गण्य आचरण सूत्रों में से एक है।

मानव जीवन उतार-चढाओं का एक रंगस्थल है। मानव अनेकानेक विचारों व भावनाओं का केंद्र-बिन्दु होता है। उसमें समय-समय से घटित घटनाओं से जनित भावनाओं की लहरें उठती और गिरती रहती हैं।

मनुष्य को चाहिए कि उसे दुःखद घटनों से सामना करने पर उद्विग्न व उत्तेजित न बने। उसी प्रकार, सुख-भोगों के संस्पर्श से मानव को अपनी स्मृति को नहीं खो बैठना चाहिए। यानी-मानव को दुःख में अति दुःखित और सुख भोगों में अपना वश खोना नहीं चाहिए। उसे चाहिए कि वह सुख दुख का संतुलन बनाये रखे। सुख दुःख के मधुर मिलन से यह जीवन परिपूरन बन जाता है ऐसी स्पृहा का परिचय मानव को रखना चाहिए।

वही ''मुनि'' कहलाता है, जो संतोष, प्रेम, भय, क्रोध आदि संचारी भावों का समन्वय कर, एक जुट होकर, न टूट कर - अपना जीवन व्यतीत कर पाता हो।

उपसंहार

गीता विश्वजीवन-वेदांत सार है। गीता में मनुष्य के जीवन की स्थिर रेखा खिंची गयी है। मानव जीवन की यह स्थिर रेखा को खिंची हुई आज से पाँच हजार साल बीत चुके हैं। जो स्वच्छ मना बनना चाहता है, जो स्थिर एक मात्र जीवन बिताना चाहता हो, उसे भगवद्गीता का अनुसरण करना चाहिए। गीताशास्त्र मानव-जीवन-वेद-नाद है।

श्री प्रपन्नामृतम्

(42वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

आचार्य-कृपा ही मोक्ष का उपाय है

एक समय में सुप्रसिद्ध आचार्य श्रीमहापूर्णाचार्य स्वामी ने आचार्य चरणों की आज्ञा से श्रीमानेर नम्बि नामक एक शूद्रकुलोत्पन्न महात्मा का ब्रह्ममेध विधि से दाह संस्कार सम्पन्न किया था। जिससे कि समस्त रूढ़िवादी ब्राह्मण समाज ने एक स्वर से उनकी निन्दा करना प्रारम्भ कर दिया। सभी लोगों ने आपके इस कार्य को वर्णाश्रम धर्म के विपरीत मानकर कहा कि महापूर्णाचार्य स्वामी ने यह सर्वथा धर्म-विरुद्ध कर्म किया है जिससे वे पतित हो गये हैं। एक दिन श्रीमहापूर्णाचार्य स्वामी की सुपुत्री श्रीमती अतुलायी ने अपने पिता की अपकीर्ति सुनकर समाज के प्रमुख लोगों के सामने कहा- ''मेरे पिताजी ने कोई धर्म विरुद्ध कार्य नहीं किया है। इससे तो बढ़कर कार्य श्रीरंगनाथ भगवान ने किया है जो उन्होंने शूद्रकुल के श्रीपाणयोगी (मुनिवाहन स्वामी) का पूर्ण शरीर ही निगल लिया था। अतः इस कर्म से भगवान भी अपवित्र हो गये हैं।'' इस प्रकार कहकर आचार्य परांकुशदास स्वामी के चरणों की शपथ खाकर भगवत्-भागवत आचार्यनिष्ठा वाली साध्वी अतुलायी अपने पिता के समीप में ही रहने लगी।

श्रीमहापूर्ण स्वामी द्वारा सम्पन्न किये गये इस संस्कार की घटना को सुनकर यतिराज श्री रामानुजाचार्य उनके समीप गये और साष्टांग प्रणाम करके बोले- जबकि आपके आदेश से समस्त कार्य करने वाले हम सेवक लोग आपकी सेवा में सदैव तत्पर हैं फिर वर्णाश्रम धर्म विरोधी इस कार्य को आपने स्वयं क्यों किया? वर्णाश्रम धर्म की मर्यादा का त्याग करके आपने यह मार्गान्तर क्यों अपनाया? यतिराज के प्रश्नों को सुनकर वर्णाश्रम धर्म से मानव धर्म को श्रेष्ठ बताते हुए श्रीमहापूर्ण स्वामीजी ने कहा- ''इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न भगवान श्रीराघवेन्द्र ने अधम पक्षी जटायु का ब्रह्ममेध विधि से दाह संस्कार किया था और शूद्र कुल में उत्पन्न महात्मा विदुर का दाह संस्कार ब्रह्ममेध विधिपूर्वक धर्मराज युधिष्ठिर ने सम्पन्न किया था। तो परमभक्त मानेर नम्बि जटायु से भी अधिक निकृष्ट थे क्या? या मैं सामान्य धर्म से संलग्न रहने वाला धर्मराज युधिष्ठिर से भी बड़ा हूँ क्या? हे यतिराज! भगवान का भक्त जो शूद्र है वह शूद्र नहीं है, अपितु निश्चय ही भागवत् है। यह वेदार्थ है।'' गुरुदेव के इन वचनों

को सुनकर यतिराज बड़े प्रसन्न हुए। आचार्य महापूर्ण स्वामीजी का उपदेश है कि भगवान के भक्तों में वर्ण या जाति का भेद-भाव नहीं करना चाहिये। वे सामान्य धर्मानुसार अमुक वर्ग के व्यक्ति नहीं अपितु भगवान के अनन्य भक्त हैं, इस भावना से उनका परिचय सत्कार होना चाहिए।

यतिराज श्री रामानुजाचार्य का स्वभाव संसार के सभी प्राणियों के प्रति अत्यन्त दयामय था। किसी भी प्राणी को दुःखित अवस्था में देखकर आप का हृदय द्रवित हो उठता था। एक समय में एक मूक व्यक्ति (गूँगा) को मार्ग से जाते हुए देखकर आप दयावश उसका हाथ पकड़कर उसे मठ में ले गये और एक कोठरी में ले जाकर अपने चरणकमल का स्पर्श कराकर संकेत करते हुए आचार्य निष्ठा का उपदेश दिया और संसार से उद्धार के लिए गुरु का विग्रह ही परम रक्षक है, यह उसको समझाया।

यतिराज के बुद्धिमान शिष्य कूरेशाचार्य ने (जो किवाड़ के छिद्रों से यह समस्त घटना देख रहे थे) मन में दुःखित होकर कहा कि यदि आज मैं भी मूक (गूँगा) होता तो यतिराज मुझ पर इसी प्रकार कृपा करते और अपने चरणों का स्पर्श कराकर आचार्य निष्ठा का उपदेश देते। मुझे यतिराज ने अब तक अपने श्रीविग्रह को संसार का रक्षक नहीं बताया, अपितु भगवान के विग्रह को ही संसार का रक्षक बताया है। जैसे इस गूँगे को बताया है, वैसे ही मुझे बताते तो मैं भी निश्चय ही यतिराज के चरणकमलों के सहारे संसार-सागर से पार हो जाता। ऐसा कहकर कूरेशजी मूर्छित होकर गिर पड़े।

श्रीवैष्णवों के हृदय में रहने वाले सन्देह को दूर करने के लिए यतिराज ने कूरेशादि शिष्यों को साथ लेकर वहाँ से गोष्ठीपुरम् के लिए प्रस्थान किया और वहाँ जाकर आपने देखा कि एक सुदृढ़ किवाडों वाली कोठरी में गुरुवर्य श्रीगोष्ठीपूर्णाचार्य स्वामी ध्यानमग्न है। श्रीस्वामीजी जब बाहर आये तब यतिराज ने शिष्य-समुदाय के साथ हाथ जोड़कर उनको प्रणाम करके पूछा- गुरुदेव! आप किस मंत्र का जप और किस का ध्यान कर रहे हैं? यह हमारी जानने की इच्छा है। कृपया बताकर शिष्यजनों की जिज्ञासा को शान्त कीजिये। यतिराज के प्रश्न को सुनकर श्रीगोष्ठीपूर्णाचार्य स्वामीजी बोले- ''कावेरी नदी में अघमर्षण मंत्र का जप करते हुए श्रीयामुनाचार्य स्वामीजी की पीठ कछुए के समान प्रतीत होती है, वही पृष्ठ मेरे लिए सदैव ध्यान की वस्तु है एवं उनका परम पावन नाम ही मेरे लिए मंत्र है। इसलिए मैं गुरुदेव के श्रीविग्रह का ध्यान और उनका नाम का अहर्निश जप करता रहता हूँ शास्त्रों में गुरु का महत्व सर्वोपरि माना गया है। अंध, बधिर, मूक, पंगु एवं बालक सभी गुरु की कृपादृष्टि एवं उनके सम्पर्क से मुक्ति को प्राप्त कर लेते हैं। गुरुदेव का श्रीविग्रह ध्यान का विषय है, उन्हीं का चरणकमल पूजा का विषय है, और उनका पवित्र नाम ही मंत्र है एवं उनका अनुग्रह मोक्ष का मूल है।'' यह सुनते ही श्री यतिराज के शिष्य कूरेश आदि का संदेह दूर हो गया और सब लोग श्रीरंगम आ गये।

आचार्य देव के पुनीत नाम का निरंतर स्मरण करना चाहिए और उनके ही श्रीविग्रह का ध्यान करते हुए गुरुदेव ही मोक्ष के हेतु हैं, यह मानकर उनके इन वचनों में विश्वास रखना चाहिए। इस प्रकार श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामी के द्वारा कहे गये वचनों का यतिराज ने अपने आश्रित सभी श्रीवैष्णव शिष्यों को उपदेश दिया।

।। श्री प्रपन्नामृत का 42वाँ अध्याय पूर्ण हुआ।।

क्रमशः

योग का वैज्ञानिक स्वरूप

अंग्रेजी मूल - डॉ.के.वी.रघुपति

अनुवाद - डॉ.बी.ज्योत्स्ना देवी

योग एक विज्ञान है, तत्वमीमांसा दर्शन का विषय है। भले ही तत्वमीमांसा में तर्क हो किंतु वह पूर्ण विज्ञान नहीं है। जब कि योग विज्ञान है। विज्ञान के पास पदार्थ की संरचना और व्यवहार की तर्कसंगत समझ होती है, किसी प्रयोग में पहले परीक्षण किए बिना कुछ भी स्वीकार नहीं किया जाता है। मौलिक रूप से, तत्वमीमांसा में तर्क होता है। उस में इस बात का अध्यायन किया जाता है कि भौतिक दुनिया से परे क्या मौजूद हो सकता है। योग एक विज्ञान है क्योंकि यह मुख्य रूप से शरीर और मन पर केंद्रित है। यह स्वयं का विज्ञान है, शुद्ध विज्ञान के विपरीत जो पदार्थ का विज्ञान है, योग सावधानीपूर्वक शरीर, मन और हर समय जागते रहने का अध्ययन करता है। यह सिर्फ एक साधन है जो सिद्धांत से परे है।

योग अमूर्त विचारों के साथ संलग्न या शामिल नहीं होता है। तत्वमीमांसा के विपरीत, जो वास्तविकता के सिद्धांत से संबंधित है। यह सिद्धांत नही है। तत्वमीमांसा सत्तामीमांसा से स्वतंत्र, मौजूद चीजों की प्रकृति और संबंधों का अध्ययन है। शुद्ध विज्ञान योग का आधार है। यह शरीर और मन दोनों से संबंधित है। यह इस बात पर चर्चा करता है कि शरीर मन के साथ कैसे संपर्क करता है और मन को कैसे आकार देता है और साथ ही मन शरीर के साथ कैसे संपर्क करता है और आकार देता है। इन दोनों विषयों पर पतंजलि ने वैज्ञानिक और तार्किक तरीके से प्रकाश डाला है।

उनका अष्टांग योग यम (निषिद्ध) से शुरू होकर समाधि तक एक चरण से दूसरे चरण तक एक व्यवस्थित प्रगति को स्पष्ट करता है। अन्य चरणों में आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा और ध्यान शामिल है। प्रत्येक चरण या अंग, लोगों की एक अलग शारीरिक विशेषता पर केंद्रित है। जबकि आसन भौतिक को संबोधित करता है, प्राणायाम तंत्रिकाओं और तंत्रिका केंद्रों को संबोधित करता है, प्रत्याहार संवेदी अंगों को संबोधित करता है। धारणा और ध्यान मन को संबोधित करता है, यह और नियम सिद्धांत मानव जीवन के नैतिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते है। भौतिक, सेरेब्रल (मस्तिष्क), बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक महत्वपूर्ण पाँच प्राणी है जो इन सात अंगों में से प्रत्येक को खूबसूरती से संबोधित करते हैं। अन्य अंगों पर विचार किए बिना केवल इनमें से किसी एक पर ध्यान केंद्रित करना असंभव है। उनमें से प्रत्येक परस्पर जुडे हुए है। भावनात्मक और व्यवहार के स्तर पर जुडे हुए है जैसे शारीरिक और मानसिक, आध्यात्मिक और मानसिक।

मानस और चित्त पतंजलि योग सिद्धांत के दो महत्वपूर्ण विचार हैं। उनके दर्शन के अन्य तत्व उतने ही महत्वपूर्ण है, लेकिन ये दोनों इसके मूल हैं। समाधि पद में योग का वर्णन स्वयं पतंजलि ने ''चित्त वृत्ति निरोध योगः'' के रूप में किया है। इस प्रकार, योग के अभ्यास में वृत्तियों, या मानसिक प्रदूषकों के मन को शुद्ध करना शामिल है। ये वृत्तियाँ संस्कारों से बनी होती है, जो कर्म में हर मिनट किए जाने वाले कार्यों से उत्पन्न होती है। अवचेतन, संचित छापों, विचारों छवियों और अन्य चीजों का भंडार है, जो चेतन की तह तक धकेला जाता है और इनमें समाहित होता है, वे अहम् और अस्मिता के विकास की नींव के रूप में कार्य करते हैं, वृत्तियों (मानसिक, परिवर्तनों) के समाप्त होने के बाद क्या होता है? शुद्ध चेतना का अंत होने लगता है। यह शून्यता की स्थिति है। इसमें साधक का मैं पूर्णतः विलीन हो जाता है। इस समय मैं पूरी तरह से धुल जाता है, इसे नष्ट कर देता है। पाठ यह कहकर जारी रखता है कि उसके बाद, एक साधक मृत्यु और पुनर्जन्म दोनों से प्रतिरक्षित होता है।

एक साधक जो त्रिगुणों, विवेक, वैराग्य और निधिध्यास का अभ्यास करता है, वृत्तियों से छुटकारा पाने के लिए इन विधियों या इन गुणों को नियोजित करता है। वैराग्य का अर्थ है चीजों के प्रति बेपरवाह हो जाना। ध्यान निधिध्यास है। जब वैराग्य और विवेक के माध्यम से वृत्तियों को मिटा दिया जाता है, तो वास्तव में ध्यान हो सकता है, साधक के लिए ध्यान में आगे बढ़ना तब तक चुनौतीपूर्ण होता है जब तक उसके पास आसक्ति है। ये लगाव मानसिक स्वास्थ्य को बोधित करते हैं। इसलिए, मन की वृत्तियों (संशोधनें) से मुक्त होने के बाद धारणा और ध्यान के चरण हो सकते हैं और साधक प्रकृति के क्षेत्र को शुद्ध चेतना की दुनिया में स्थानांतरित कर देता है।

भले ही यह सुनने में कैसा लगे, इनमें से कोई भी मात्र सिद्धांत नहीं है। हालाँकि, अनुभव किसी को वास्तविकता को पहचानने में सक्षम बनाता है। इसलिए योग केवल अभ्यास है, सिद्धांत नही, यह एक विज्ञान है क्योंकि पतंजलि ने ऐसे कदम निर्धारित किए जो बताते हैं कि कैसे साधक को उत्तरोत्तर और कदम दर कदम आगे बढ़ना चाहिए। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता है, साधक शारीरिक और मानसिक परिवर्तनों को देख सकता है। वह जितना अधिक वह इन सुधारों को देखता है उतना ही अधिक आत्मविश्वास और विश्वास उसे प्राप्त होता है। परिणामस्वरूप साधक आत्मविश्वास और विश्वास के साथ आगे बढ़ता है। जैसे जैसे साधक स्पष्ट परिवर्तन देखता है, उस का विश्वास बढ़ता जाता है। इन्हें कभी-कभी योगियों द्वारा प्रामाणित किया गया है।

इसलिए योग एक विज्ञान है। क्योंकि पतंजलि यह मांग नही करते हैं कि हम उनके सिद्धांतों को पहले परीक्षण के बिना अपनाए। योग को विज्ञान के रूप में स्थापित करने के लिए जीव जगत में उनके सिद्धांतों का परीक्षण करना चाहिए। उनके सिद्तों को सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों तरह से प्रदर्शित किया जाना चाहिए।

दि. 29.04.2023 से दि. 01.05.2023 तक
तिरुमल, नारायणगिरि उद्यानवन में संपन्न श्री पद्मावती
श्रीनिवास का परिणयोत्सव के दृश्य।

अंतःकरण शुद्धी के लिए 'अष्टांगयोग' - पतंजलि महर्षि

तेलुगु मूल - डॉ.ई.पी.नागलक्ष्मी अनुवाद - षैक षावली

'यमनियमासन प्राणायाम प्रत्याहार-धारण-ध्यान समाधयोऽष्टावंगानी'

उपर्युक्त संस्कृत श्लोक के अनुसार, योगानुष्ठान के आठ अंग हैं -अंग का अर्थ है - 'विधानस्थिति'

१) यम :- 'अहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्म चर्या परिग्रहा यमाः

(योग सूत्र - २-३०)

अहिंसा, सत्य, चोरी न करना, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह(दान न स्वीकारना)। उपर्युक्त इन पाँच 'यम' कर्त्तव्य निष्ठा से जो अवश्य पालन करेगा वही योगाभ्यास के लिए योग्य है।

२) नियम :- 'शौचसंतोषतपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि नियमाः

(योग सूत्र - २-३२)

उपर्युक्त योग सूत्र के अनुसार - शौच - बाह्य, अंतःकरण शुद्धी; आनंद-विचार को त्याग कर संतुष्टता से रहना। ध्यान - मान - अपमान पर शोतोष्ण (सुख-दुःख) में सदा समभाव रखना चाहिए। स्वाध्याय - सत् ग्रंथों का पठन, श्रवण, स्मरण रखना चाहिए। ईश्वरप्रणिधान - हर कार्य को, प्रतिफल अपेक्षा (अर्थात् फल चाहे बिना) भगवान को समर्पण करना चाहिए।

३) आसन :- स्थिरसुखमासनम्

(योग सूत्र - २-४६)

सुस्थिर और सुखद पूर्वक से बैठने की पद्धति को ही 'आसन' कहते हैं। सुस्थिर/स्थिरासन के बिना 'प्राणायाम' के योग साधन का अभ्यास नहीं कर सकते हैं। स्थिरासन का मतलब- साधक को अपना शरीर, अपने स्वाधीन में रखना। आसन को प्राप्त करने के पश्चात शीतोष्णादी (सुख-दुःख) के द्वंद्व में नहीं फँसेगा और आनंद-दुखद स्थितियों में भी समभाव से रहेगा।

४) प्राणायाम :- तस्मीन् सति श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः

(योग सूत्र - २-५०)

उच्छवास(सांस लेना), निश्वास(सांस छोडना), गति निरोध(सांस को रोकना) से प्राणायाम प्राप्त होगा। प्राणायाम योग क्रिया से उच्छवास-निश्वास की गति पूर्ण रूप से कम होकर, मन की चंचलता श्वास गति की अनुकरण करती है। इस सूक्ष्म तत्त्व ज्ञान को प्राप्त कर प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिए।

योगानुष्ठान के आठ अंग -
१) यम, २) नियम, ३) आसन, ४) प्राणायाम, ५) प्रत्याहार, ६) धारण, ७) ध्यान, ८) समाधि.

इन सभी अष्टांगों को योग साधना के माध्यम से जो स्वीकार करना चाहते हैं, वे प्रप्रथम कुछ नियमों का पालन अवश्य करना चाहिए।

५) प्रत्याहार :- स्वविषयासंप्रयोगे चित्तस्वरूपानुकार इवेंद्रियाणां प्रत्याहारः

(योग सूत्र - २-५४)

पंचेद्रिय अपने इच्छाओं का त्याग कर, चित्त स्वरूप को प्राप्त करना ही प्रत्याहार कहते हैं। जिस से उत्कृष्ट इन्द्रिय वशीकरण प्राप्त होगा। योगी अपने इन्द्रियों को बाह्य इच्छाओं से रोख कर, मन में ऐक्य लेगा तो संपूर्ण इन्द्रिय निग्रह प्राप्त करेगा।

६) धारण :- 'देशबंधश्चित्तस्य धारणा'

(योग सूत्र - ३-१)

किसी भी स्थान पर मन को स्थिर रखने को ही 'धारण' कहते हैं। शरीर के अंतःकरण में या शरीर के बाह्य में 'किसी भी एक स्थान का आश्रय पाकर मन को सुस्थिर रखना ही धारण' कहते हैं। यह धारण 'प्राणायाम' के 'योग साधना' से ही सिद्ध होता है।

७) ध्यान :- तत्र प्रत्ययैकनता ध्यानम्

(योग सूत्र - ३-२)

एकभाव प्रवाह के रूप-ज्ञान को ही 'ध्यान' कहते हैं। सर या हृदय में प्रारंभ होकर, एक लक्ष्य सिद्धी को लेकर, शरीर के अन्य अंगों से न होकर, लक्ष्य भाग में स्पर्शानुभव प्राप्त करेगा तो उस स्थिति को ही 'धारण' कहते हैं। इस प्रकार कुछ समय तक चित्त या मन को रोकने की स्थिति को ही 'ध्यान' कहते हैं।

८) समाधि :- 'तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः'

(योग सूत्र - ३-३)

रूपों या स्वरूपों को छोड़कर, केवल भावार्थ को स्पष्ट करेगा तो उसे 'समाधि' कहते हैं। ध्यान में शारीरिक रूप के बाह्य भाग को छोड़ने से 'समाधि स्थिति' प्राप्त होती है। ऐसी स्थिति में चित्त/मन में स्वरूप नहीं होता है। ऐसी स्थिति को ही 'समाधि' कहते हैं।

इसलिए जब हम योग सूत्रों का अनुकरण नहीं कर सकते हैं तो तब 'अष्टांगयोग' को एक बार पालन करेंगे तो मनुष्य का जीवन धन्य होगा।

दि.04.05.2023 से दि.06.05.2023 तक तिरुचानूर श्री पद्मावती देवी का वार्षिक वसंतोत्सव वैभवोपेत ढंग से संपन्न किया गया है। इस संदर्भ में स्नपन तिरुमंजन कार्यक्रम को आयोजित किया गया है। तदनंतर स्वर्ण रथ पर देवी माँ ने दर्शन दिया।

दि.04.05.2023 को आं.प्र., पार्वतीपुरम् मन्यम् जिला, सीतंपेटा प्रांत में ति.ति.दे. के द्वारा निर्मित नूतन श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी के मंदिर का महासंप्रोक्षण कार्यक्रम में विशाखा शारदा पीठाधिपति श्रीश्रीश्री स्वरूपानंदेंद्र सरस्वती स्वामीजी और ति.ति.दे. जे.ई.ओ. श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., ने भाग लिया है। इस अवसर पर कल्याणोत्सव कार्यक्रम को अत्यंत वैभवोपेत ढंग से संपन्न किया है।

तिरुमल, वसंत मंडप में दि.04.05.2023 को नृसिंह जयंती के संदर्भ में श्री नृसिंह पूजा को आयोजित किया है।

दि.05.05.2023 को विशाखा शारदापीठम् श्रीश्रीश्री स्वरूपानंदेंद्र सरस्वती स्वामीजी और उत्तराधिकारी श्रीश्रीश्री स्वात्मानंदेंद्र सरस्वती स्वामीजी ने तिरुमल श्री बालाजी को दर्शन किया है।

दि.29.04.2023 को आं.प्र. के राज्यपाल माननीय श्री एस.अब्दुल नजीर ने श्री बालाजी का दर्शन किया है। इस संदर्भ में ति.ति.दे. ई.ओ. ने चित्रपठ को सौंप दिया है। राज्यपाल के विशेष सचिव भी भाग लिया।

दि.15.04.2023 को ति.ति.दे. न्यास-मंडली के पदेन सदस्य के कार्यभार को स्वीकारते हुए धर्मस्व शाखा के आयुक्त श्री सत्यनारायण जी। इस संदर्भ में ति.ति.दे. जे.ई.ओ. ने तीर्थप्रसाद को सौंप दिया है।

श्रीवैष्णव संप्रदाय की मार्गदर्शिका

श्रीमन्नारायण भगवान ने अपनी निर्हेतुक कृपा से, संसारियों (बद्ध जीवात्माओं) के उद्धार हेतु, सृष्टि रचना में ब्रह्म को शास्त्रों (वेदों) का ज्ञान प्रकट किया। वैदिकों के लिए वेद ही परम प्रमाण है। प्रमाता (आचार्य) ही प्रमाण (शास्त्रों) के द्वारा प्रमेय (भगवान) के विषय में पुष्टि कर सकते हैं। जिस प्रकार भगवान में अखिल हेय प्रत्यनिकत्वं (सभी अनैतिक गुणों के विपरीत) और कल्याणैकतानत्वं (सभी मंगलमय दिव्य गुण) प्रकट हैं, जो उन्हें अन्य सभी रचनाओं से पृथक करती हैं, उसी प्रकार वेदों में निम्न महत्वपूर्ण गुण है (जो उन्हें अन्य प्रमाणों से पृथक करते है) :

अपौरुषेयत्वं - जिसकी रचना किसी जीवात्मा द्वारा नहीं की गयी (प्रत्येक सृष्टि के समय, भगवान वेदों का ज्ञान ब्रह्म को प्रदान करते है जो अंततः उसका प्रचार करते हैं)। इसलिए व्यक्तिगत समझ और अनुभूति आदि द्वारा उत्पन्न त्रुटि इनमें अनुपस्थित है।

नित्य - वह अनादि है - जिसका कोई आरंभ नहीं और कोई अंत नहीं - यह भगवान के द्वारा समय समय पर प्रकट किया जाता है, जो वेदों की विषयवस्तु से पूर्णतः परिचित है।

स्वत प्रामाण्यत्व - सभी वेद व्याख्यान स्वतः ही पर्याप्त/यथेष्ट है, अर्थात् उसकी प्रामाणिकता को सिद्ध करने के लिए हमें और किसी भी साक्ष्य की आवश्यकता नहीं है।

यद्यापि वेद, शास्त्रों का बृहद शरीर है, वेदव्यास ने भविष्य में मनुष्य के विवेक की सीमित क्षमता को जानते हुए, वेद को 4 भागों में विभाजित किया - ऋग्, यजुर, साम और अथर्व। वेदांत वेदों का सार है। वेदांत, उपनिषदों का समूह है, जो अत्यंत जटिलता से भगवान के विषय में चर्चा करता है। यद्यपि वेद आराधना विधि के विषय में चर्चा करते है, और वेदांत, भगवान के विषय में चर्चा करते है, जो उस आराधना के प्रयोजन है।

महर्षि वेदव्यास द्वारा कृत ब्रह्म सूत्र को भी वेदांत का अंग माना जाता है, क्यों कि यह उपनिषदों का सार है। क्यों कि, वेद अनंत है (अंतहीन-विशाल) और वेदांत अत्यंत जटिल और मानव के विवेक की क्षमता भी सिमित है (जिसके परिणामस्वरूप अशुद्ध अर्थ निरूपण संभव है), इसलिए हमें वेद/वेदांत को स्मृति, इतिहास और पुराणों के द्वारा समझना होगा।

स्मृति - धर्म शास्त्रों का संग्रह है, जिनकी रचना महान ऋषियों जैसे मनु, विष्णु हारित, याज्ञवल्क्य आदि द्वारा की गयी है।

इतिहास- श्रीरामायण और महाभारत-दो महाकाव्यों का संग्रह है। श्रीरामायण को शरणागति शास्त्र और महाभारत को पंचमवेद (ऋग्, यजुर, साम और अथर्व वेदों के पश्चात) का स्थान प्राप्त है।

पुराण - ब्रह्म द्वारा रचित 18 मुख्य पुराण (ब्रह्म पुराण, पद्म पुराण, विष्णु पुराण आदि) और अनेकों उप-पुराणों (लघु पुराणों) का संग्रह। इन 18 पुराणों में, ब्रह्म स्वयं घोषणा करते है कि सत्व गुण के प्रभाव में वह भगवान विष्णु की स्तुति/प्रशंसा करते हैं, रजो गुण के प्रभाव में स्वयं की स्तुति/प्रशंसा करते हैं और तमो गुण के प्रभाव में शिव, अग्नि आदि की स्तुति/प्रशंसा करते हैं।

इतने प्रमाणों की उपलब्धता के पश्चात भी, शास्त्रों के द्वारा सच्चा ज्ञान प्राप्त करने और सच्चे लक्ष्य को खोजने के बजाय, संसारी अभी भी लौकिक आकांक्षाओं में निरत है। तब, भगवान स्वयं अनेकों अवतारों में प्रकट हुए, परंतु बहुत से मूर्ख लोगों ने उन्हें असम्मानित किया और उनसे बैर भी किया। यह सोचकर कि संसारियों की सहायता हेतु, उन्हें एक जीवात्मा को तैयार करना चाहिए (जिस प्रकार एक हिरन को पकड़ने के लिए शिकारी अन्य हिरन का उपयोग करता है), उन्होंने कुछ जीवात्माओं का चुनाव किया और उन्हें निष्कपट दिव्य ज्ञान प्रदान किया। ये ही जीवात्माएँ, आल्वारों के रूप में प्रसिद्ध है (जो संपूर्णतः भगवत अनुभव में लीन है)। उनमें प्रमुख है श्रीशठकोप स्वामीजी (प्रपन्न कुलकुठस्थर/ वैष्णव कुलपति) और उनकी संख्या 10 है - सरोयोगी स्वामीजी, भूतयोगी स्वामीजी, महद्योगी स्वामीजी, भक्तिसार स्वामीजी, श्रीशठकोप स्वामीजी, कुलशेखर स्वामीजी, विष्णुचित्त स्वामीजी, भक्तांघ्रिरेणु स्वामीजी, योगिवाहन स्वामीजी और परकाल स्वामीजी। मधुरकवि स्वामीजी (श्रीशठकोप स्वामीजी के शिष्य) और गोदंबाजी (विष्णुचित्त स्वामीजी की पुत्री) को भी आल्वारों की गोष्ठी में सम्मिलित किया जाता है। भगवान के पूर्ण कृपापात्र आल्वारों ने दिव्य ज्ञान की शिक्षा बहुतों को प्रदान की। परंतु क्योंकि वे सदा भगवत अनुभव में लीन रहा करते थे, भगवान का मंगलाशासन करना ही उनका परम उद्देश्य था।

भगवान ने संसार से अधिक जीवात्माओं के उद्धार हेतु श्रीनाथमुनि स्वामीजी से प्रारंभ और श्रीवरवरमुनि स्वामीजी पर्यंत क्रम में आचार्यों के अवतरण की दिव्य व्यवस्था की। भगवद् रामानुज, जो आदिशेषजी के विशेष अवतार हैं, हमारी इस आचार्य परंपरा क्रम के मध्य में अवतरित हुए और उन्होंने इस श्रीवैष्णव संप्रदाय और विशिष्टाद्वैत सिद्धांत को असीमित ऊँचाईयों तक आगे बढ़ाया। पराशर, व्यास आदि महान ऋषियों की रचनाओं का अनुसरण करते हुए, उन्होंने दृढ़ता और स्थिरता से विशिष्टाद्वैत सिद्धांतों को स्थापित किया। उन्होंने 74 आचार्यों को सिंहसनाधिपतियों के रूप में स्थापित किया और उन्हें निर्देश दिए कि वे लोग श्रीवैष्णव संप्रदाय को उस प्रत्येक मनुष्य तक पहुँचाए, जो भगवान के विषय में जानने की और सच्चा ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा रखता हो।

श्री रामानुज स्वामीजी के महान कार्यों और सभी के एकमात्र रक्षक होने के कारण ही, इस संप्रदाय को ''श्रीरामानुज दर्शन'' भी कहा जाता है। कुछ समय पश्चात, दिव्य प्रबंधम और उनके अर्थों के प्रचार हेतु, वे श्रीवरवरमुनि स्वामीजी के रूप में पुनःप्रकट हुए। श्रीरंगम मंदिर में श्रीरंगनाथ भगवान स्वयं श्रीवरवरमुनि स्वामीजी को अपने आचार्य के रूप में स्वीकार करते हैं और उस आचार्य रत्नहार (आचार्य परंपरा) को पूर्ण करते हैं जो उन्हीं से प्रारंभ हुई था। श्रीवरवरमुनि स्वामीजी के बाद, उनके प्रमुख शिष्यों, जिन्हें अष्ट-दिग्गज (अष्ट गाधी) कहा जाता है ने पोन्नडिक्काल् जीयर के नेतृत्व में श्रीवैष्णव संप्रदाय को सभी जगह प्रचारित किया। कालांतर में, इस संप्रदाय में बहुत से आचार्य प्रकट हुए और उन्होंने हमारे पूर्वाचार्यों के महान कार्य को आज भी जारी रखा है।

क्रमशः

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

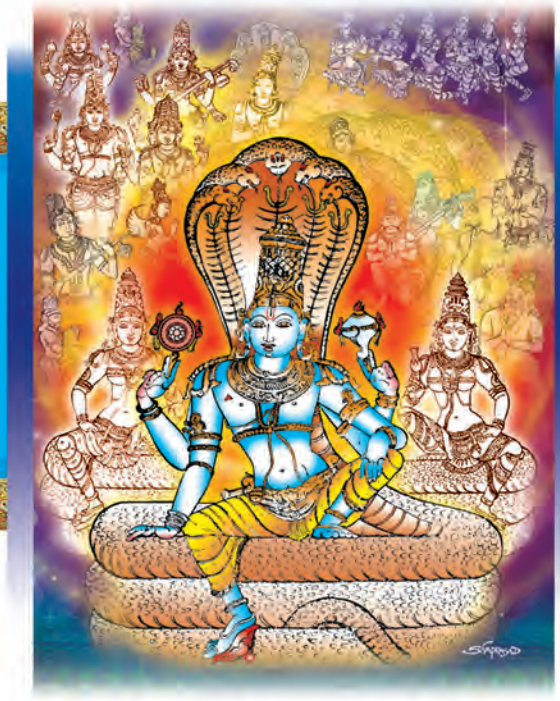

34) तिरुवालि - एवं तिरुनगरि

तिरुवालि दिव्य क्षेत्र - शीरकाळि रेल स्टेशन से 8 कि.मी. दूरी पर है। तिरुनांगूर से 5 कि.मी. है। तिरुनगरि तिरुवालि से लगभग 5 कि.मी. पर है। शीरकाळि से भी बस की सुविधा है। तिरुनांगूर से भी जा सकते हैं। चेन्नै-तिरुच्ची मेइन लाइन में चेन्नै से शीरकाळि 261 कि.मी. दूरी पर है। तिरुवालि-तिरुनगरि दोनों - एक दिव्य क्षेत्र माने जाते हैं। तिरुवालि-

मूलमूर्ति - लक्ष्मीनृसिंह, वयलाळि मणवाळन्, पूर्वाभिमुखी। आसीनस्थ दर्शन देते हैं।

उत्सव - तिरुवालि नहराळन्।

तायार (माताजी) - अमृतघटवल्लि।

तीर्थ - श्लाक्षणि पुष्करिणी।

विमान - अष्टाक्षर विमान।

प्रत्यक्ष - तिरुमंगै आल्वार, अलादि निकऋम प्रजापति। आल्वार द्वारा मंगलाशासित वयलालि मनवाळन् तिरुवालि में होकर तिरुनगरी में विराजमान हैं। इसलिए दोनों एक क्षेत्र है।

तिरुनगरि

मूलमूर्ति - वेदराजन (वयलालि मणवाळन) पश्चिमाभिमुखी आसीनस्थ दर्शन देते हैं।

उत्सव - कल्याण रंगनाथन।

तायार (माताजी) - अमृतवल्लि।

यह (कटैयलूर) तिरुमंगै आल्वार का जन्म स्थल है। उनके द्वारा आराधित 5 नृसिंह मूर्तियों में 2 नृसिंह मूर्तियाँ यहाँ विराजमान हैं। मंदिर में तिरुमंगै आल्वार की अलग सन्निधि है। यहाँ यह आल्वार कोयिल नाम से भी प्रचलित है।

यहाँ यह आल्वार (गिद्ध) शिकारी के रूप में दर्शन देते हैं। अपने जीवन काल में आल्वार द्वारा आराधित 'चिन्तनैक्किनियान्' (छोटी सी मूर्ति) आल्वार के पास विराजमान हैं।

यहाँ से एक कि.मी. दूरी पर वेदराजपुरम नामक स्थान में तिरुमंगै आल्वार ने भगवान को

मार्ग में लूट-पाट किया तब रंगनाथ भगवान ने नव दंपति के रूप में दर्शन देकर इनको अष्टाक्षर मंत्र का उपदेश देकर अनुग्रह किया। इसलिए यहाँ के भगवान का नाम कल्याण (विवाह) रंगनाथ है।

मंगलाशासन - (तिरुवालि - तिरुनगरि) 2 आल्वार, कुल 42 दिव्य पद।

35) तिरुत्तेवनार तोहै - (कीळच्चालै) माधव पेरुमाळ कोविल

यह दिव्य क्षेत्र शीरकाळि स्टेशन से लगभग 9 कि.मी. पर है। तिरुवालि में (बस से) उतरकर लगभग 1 कि.मी. जाना है। चेन्नै-तिरुच्ची मेइन लाइन में चेन्नै से 261 कि.मी. पर है।

मूलमूर्ति - देय्व नायकन, पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

उत्सव - माधवप्पेरुमाळ।

तायार (माताजी) - कडलमकळ नाच्चियार।

तायार उत्सवर - माधव नायकि।

तीर्थ - शोभन पुष्करिणी, देव सभा पुष्करिणी।

विमान - शोभन विमान।

प्रत्यक्ष - वशिष्ट।

यहाँ के भगवान पूस के (तै) अमावस्या के दूसरे दिन तिरुनांगूर की 11 गरुड सेवा में पधारते हैं।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 10 दिव्य पद।

क्रमशः

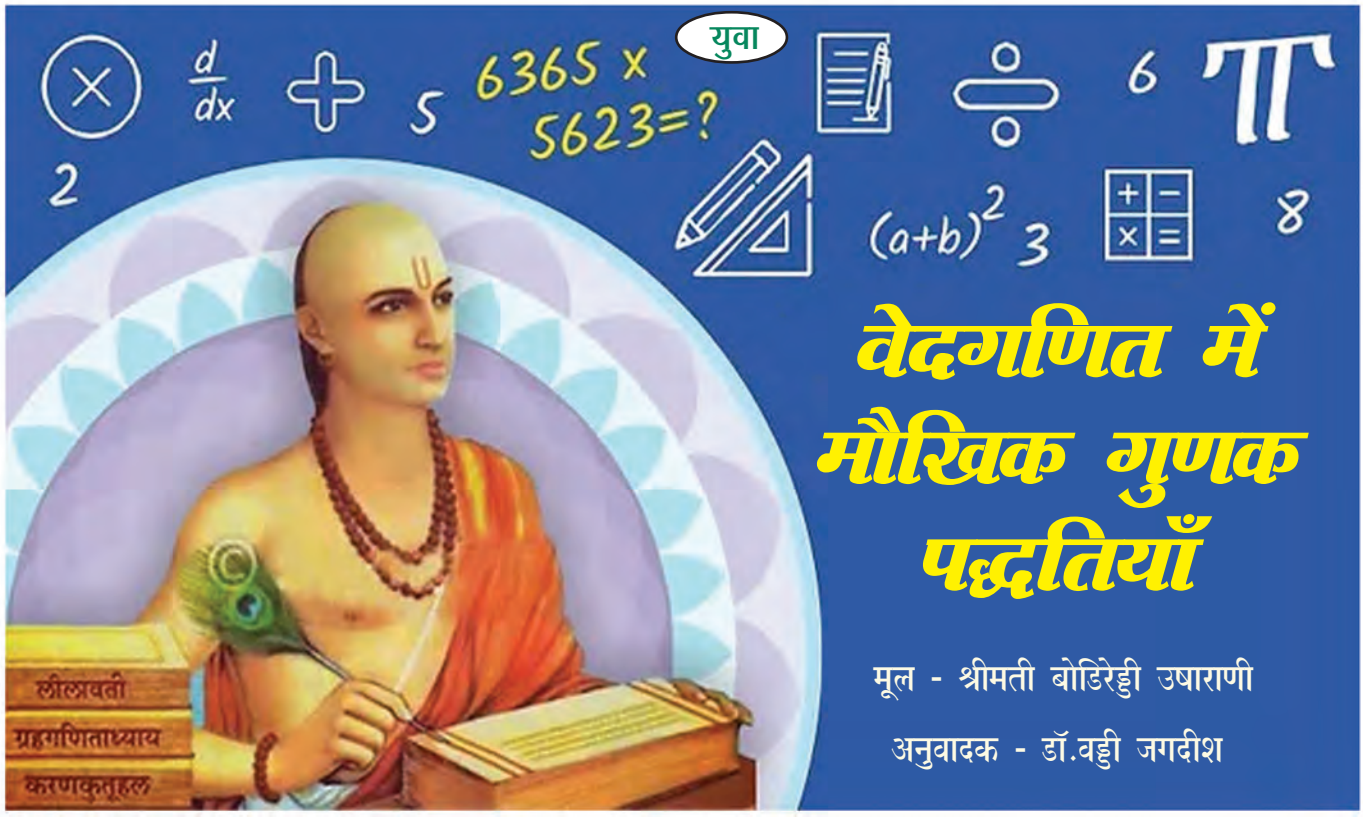

वेदगणित में मौखिक गुणक पद्धतियाँ

मूल - श्रीमती बोडिरेड्डी उषाराणी

अनुवादक - डॉ.वड्डी जगदीश

वेदों के कुछ सरल सूत्रों को उपयोग करके मौखिक गुणन किया जा सकता है। इस विधि में हम निकटतम पूर्ण संख्याओं की सहायता ली जाती है। अर्थात् जब गुणन करने की दो संख्याएँ 10 के पास हो तो 10 से जितना कम है उसे दशम के रूप में लिया जाता है। संख्याओं के दस के अंतर को जानने के बाद, हम उस संख्या को आधार बना लेते हैं। जिससे गुणन किया जा सकता है इसे बीजगणित के द्वारा भी इस रूप में समझाया जा सकता है। इस पद्धति के अध्ययन करने केलिए 5X5 पहाडे का जानना काफी है।

$$(x-a)\ (x-b)=x\ (x-a-b)+ab$$

10 के पास संख्याओं का लब्ध को पहचानना :

दो संख्या 10 के करीब होने पर दो अंकों को 10 से घटाने पर आनेवाली संख्याओं के गुणन फल को प्रथम स्थान पर लिखना चाहिए। फिर दो अंकों को मिलाकर उस में 10 को निकालकर बाकी को दशम के स्थान पर लिखना चाहिए।

उदा : 9X9 का गुणन चाहिए तो...

ये दोनों अंक 10 के करीब हैं। 10 में से निकालने पर 1, 1 आते हैं। उन का लब्ध 1X1=1 को दशम के स्थान पर लिखना चाहिए।

फिर दोनों संख्याओं को जोड कर उस के कुल में 10 को निकालने पर जो आता है उसे प्रथम के स्थान पर लिखना चाहिए। जैसे 9+9-10=8 आता है। इसे पहले स्थान पर लिखना चाहिए। अब प्रथम स्थान पर 8 और दशम के स्थान पर 1 को रखने से जैसे 81 हो जाता है। 9x9=81 का गुणन फल यही होगा।

इसी रूप में 9x8=(9+8-10), (10-9) (10-8) = 72 ,

7x9=(7+9-10), (10-7) (10-9) = 63 होगा।

दूसरे उदाहरण में 7x 6 का गुणन का फल चाहिए तो...

7, 6 को जोड कर 10 में से निकालने पर 7+6-10=3 आता है। इसे शतक के रूप में मानने से 30 होता है।

7, 6 को 10 से घटाने पर क्रमानुसार 3, 4 आते हैं। इन का लब्ध 3X4=12 होता है। इसे 30 को मिलाने से अंकों का गुणन 30+12=42 होता है।

ऐसे ही 6X6 = (6+6-10), (10-6) (10-6)

= 20+16

= 36

12X13 = (12+13-10), (12-10) (13-10)

= 156

13X13 = (13+13-10), (13-10) (13-10)

= 169

अगर एक संख्या 10 से कम दूसरी दूसरी संख्या 10 से अधिक होने पर भी इसी पद्धति को उपयोग से किया जा सकता है।

उदा : 9X12 का गुणन फल चाहिए तो...

9X12 = (9+12-10), (10-9) (10-12)

= 11, 1X-2

= 110-2

= 108

इस तरह आसानी से पहाडे की गणना की जा सकती है।

20 के करीब संख्याओं के लब्ध को पहचानना :-

20 के करीब संख्याओं को 20 से घटा दीजिए। इन के लब्ध को प्रथम स्थान पर लिखिए। फिर

दोनों संख्याओं को जोड कर 20 से घटाने के बाद इसे 2 से गुणन करना चाहिए। इन के लब्ध को दशम के स्थान पर लिखना चाहिए।

उदा-1) 19X19 का गुणन फल चाहिए तो...

ये दोनों 20 से करीब हैं। इन्हें 20 से निकालने पर क्रमशः 1, 1 आते हैं।

दोनों संख्याओं को जोड कर (19+19=38) उसे 20 में से घटा दीजिए। तब 18 आता है। इसे 2 से गुणना करने के बाद आनेवाले लब्ध 36 को शतक, दशम स्थानों में लिखिए। तब लब्ध 361 होगा।

उदा-2) 23x 21 का गुणन फल चाहिए तो...

इन का लब्ध 20 से घटाने पर क्रमशः -3, -1 आते हैं। इन का लब्ध 3 होता है। इसे प्रथम स्थान पर लिखना

श्री वेंकटेश्वर परब्रह्मणे नमः

हिन्दू होने के नाते गर्व कीजिए!

* ललाट पर अपने इच्छानुसार (चंदन, भस्म, नामम्, कुंकुम) तिलक का धारण करें।
* नहाने के बाद निम्न भगवन्नामों में से किसी एक का एक पर्याय में १०८ बार जप करें।

श्री वेंकटेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो नारायणाय।

नीति पद्यम्

आन्ध्र देश के कबीर श्री वेमना

(संत वेमना की कुछ चुनी हुई रचनाएं)

मिथ्याडंबर

मतपु वेषधार्लु महिमीद बदिवेलु

मूढ़ जनुल गलप मूगु चुंद्रु।

कोंगलु गुमिगूडि कोरकवा बोदेलु?

विश्वदाभिरामा विनुरवेमा ।।21।।

कुछ धूर्त्त मताधिकारी अपने अपने संप्रदाय के अनुसार महात्माओं के वेश धारण करके गाँवों में भ्रमण करके प्रजा को ठगते रहते हैं। ऐसे पाखंडियों का अस्तित्व प्रजा जीवन के लिए उसी प्रकार अहितकार है जिस प्रकार झुण्ड बांध कर खेतों में बैठनेवाले बगुलों का जीवन हरी-भरी फसलों के लिए घातक होता है। (वर्षा और शरद में बगुले खेतों में बैठ कर मछलियों के साथ-साथ नन्हें पौधों को भी खा जाते हैं। ढोंगी धर्माचार्यों से साधारण प्रजा की बड़ी हानि होती है।)

चाहिए। अंकों को मिलाने पर (23+21=44) उन का लब्ध 20 से निकाल दीजिए तब 24 आता है। इस को 2 से गुणना करने से 48 को शतक एवं दशम स्थानों पर लिखिए। अब इन का लब्ध 483 आता है।

एक और जटिल उदाहरण देखिए... 19X23 का गुणन फल चाहिए तो... इन का लब्ध 20 से घटाने पर क्रमशः +1, -3 आते हैं। इन का लब्ध -3 आता है।

दो संख्याओं को जोडने पर कुल 19+23=42 से 20 को निकालना चाहिए। तब 22 आता है। इसे 2 से गुणना करने पर 44 होता है। इसे शतक के स्थान पर मानने से 440 आता है। इससे 3 को घटाने पर 437 होगा।

19X23= (19+23-20)X2, (20-19) (20-23)

= 22X2, 44, 1X-3

= 440-3

=437

ऐसे ही समयस्फूर्ति से एक संख्या 20 से कम होने पर और एक संख्या 20 से अधिक होने पर गुणन कर सकते हैं।

जैसे 18X24= (18+24-20)X2, (20-18) (20-24)

= 22X2, 2X-4

=440-8

=432.

जुलाई 2023

03. गुरुपूर्णिमा - व्यासपूर्णिमा

05. तिरुपति श्री विखनसाचार्य जी का शात्तुमोरा

07 से 09 तक तिरुचानूर श्री सुंदरराजस्वामीजी का अवतारोत्सव

17. तिरुमल श्री बालाजी का आणिवर आस्थान

30. तिरुमल, नारायणगिरि में छत्रस्थापन, तुलसीमाहात्म्य

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

करुत्तिल् पुहन्दुळ्ळिल् कळ्ळम् कळत्ति, करुदरिय
वरुत्तत्तिनाल् मिहवञ्चित्तु, नीयिन्द मण्णहत्ते
तिरुत्ति त्तिरुमहळ् केळ्वनु क्काक्कियपिन् एन्नेञ्जिल्
पोरुत्त प्पडादु, एम्मिरामानुज मत्तोर् पोय्प्पोरुळे॥७८॥

भगवान् रामानुज! तत्रभवांस्तु निरवधिकान् प्रयासानुररीकृत्य मां प्रतार्य मम हृदयं प्रविश्य तत्रत्यं कल्मषमखिलमपोह्य संशोध्य लक्ष्मीपतिदासभाव-मुत्पादितवानिति हेतोः भवदेकप्रवणे मम हृदि नान्यः कोऽपि विषयो लभतेऽवकाशम्॥

हे श्रीरामानुज स्वामीजी! आपने वाचामगोचर परिश्रम उठाकर, छल से मेरे हृदय में घुसकर, तत्रत्य आत्मापहार-नामक दोष मिटाकर, उसे सुधारकर लक्ष्मीपति का दास बना दिया।

अतः इसके (आपके उपकार के) सिवाय दूसरी कोई चिंता मेरे मन में प्रवेश नहीं कर सकेगी। (विवरण - मैं तो किसी प्रकार से भगवान का दास बनने अथवा श्रीरामानुज स्वामीजी की चिंता करने को तैयार नहीं था; परंतु श्री स्वामीजी ने बहुत प्रयास से और विविध उपायों से, और अंततः छलसे मेरे हृदय में घुसकर उसे पापशून्य व परिशुद्ध बनाया और मुझको भगवान का दास बना दिया। इसलिए मैं आपके इस महोपकार के सिवाय दूसरे कौन से विषय की चिंता कर सकूं? कुछ नहीं।

क्रमशः

मनुष्य हो या देवता, कोई भी हो, पति-पत्नी का संबंध तो अनोखा ही है। पत्नी हमेशा पति के योग क्षेम के बारे में ही सोचती रहती है। जो भी काम करती है, पति के कुशल क्षेम को ही नजर में रखकर करती है। नारी के ये विशिष्ट गुण हमें महाभारत के उलूपी (अर्जुन की पत्नी) पात्र में दिखाई देते हैं।

उलूपी या उलूची अर्जुन की दूसरी पत्नी है। वह नाग कन्या है। नागराज की पुत्री है। एक दिन वह पृथ्वी पर आकर गंगा नदी में नहा रही थी, तभी उसकी नजर पांडव राज कुमार अर्जुन पर पड़ती है। वह उससे मोहित हो जाती है और उसे अपना नाग लोक ले जाती है। उससे शादी का प्रस्ताव रखती है। लेकिन अर्जुन उस प्रस्ताव को इनकार करता है और कहता है कि वह ब्रह्मचर्य दीक्षा में है और तीर्थ यात्रा पर निकले है लेकिन उलूपी उसे यह समझाने में सफल हो जाती है कि अर्जुन की ब्रह्मचर्य दीक्षा द्रौपदी से ही ताल्लुक रखती है, इसलिए वह उलूपी से शादी करना धर्म विरुद्ध नहीं है। उलूपी की बातों से राजी होकर अर्जुन उससे शादी करता है। उन दोनों को इरावान नामक पुत्र पैदा होता है। नाग लोक में कुछ समय तक अर्जुन आनंद से बिताने के बाद वह वापस पृथ्वी लोक पर आ जाता है।

जब कुरुक्षेत्र युद्ध के बाद युधिष्ठिर अश्वमेध यज्ञ करना चाहता है तब यागाश्व की रक्षा करने के लिए अर्जुन को भेजता है। यागाश्व सारे देशों से घूमते हुए मणिपुर राज्य से गुजरता है तो वहाँ के राजा अर्जुन और चित्रांगदा का पुत्र बभ्रुवाहन विनयपूर्वक पिता का स्वागत करता है तो अर्जुन उसे तिरस्कार करता है। तब बभ्रुवाहन खिन्न होकर दुखी मन से वापस जाने लगता है तो उसी समय की प्रतीक्षा में रही उलूपी वहाँ प्रत्यक्ष हो जाती है और बभ्रुवाहन से कहती है कि वह भी उसकी माँ ही है। वह पाताल लोक से उसे हित पहुँचाने आयी है। पिता हमेशा अपने पुत्र को अपने से बढ़कर देखना चाहता है और तो अर्जुन जैसा महान वीर अपने पुत्र को वीर के रूप में ही देखना चाहता है। न कि एक आम आदमी की तरह। इसलिए पुत्र अपने से युद्ध करना ही अर्जुन को पसंद था। उलूपी की बातों से प्रभावित होकर बभ्रुवाहन अपने पिता अर्जुन से युद्ध करने के लिए तैयार हो जाता है। तब पिता अर्जुन और पुत्र बभ्रुवाहन के बीच में घमासान युद्ध होता है।

अंत में पुत्र के बाण प्रहार से अर्जुन की मृत्यु हो जाती है। तब बभ्रुवाहन की माता चित्रांगदा आकर उलूपी को अर्जुन की मृत्यु के जिम्मेदार ठहराती है। बभ्रुवाहन भी बहुत दुखी होकर देह को छोडना चाहता है। तब उलूपी सबको समझाती हुई कहती है कि- अर्जुन बभ्रुवाहन की वीरता से नही, उलूपी के मायाजाल से मूर्छित हो गया है। अर्जुन को देवराज इंद्र भी नहीं हरा सकता है। उसकी महानता बहुत महत्वपूर्ण है। ऐसा कहकर उलूपी अपनी नाग मणि को बभ्रुवाहन के हाथों में देकर पिता के हृदय पर रखने को कहती है। बभ्रुवाहन ऐसा करते ही अर्जुन पुनःजीवित हो जाते हैं। तब सभी खुश हो जाते हैं। होश में आने के बाद अर्जुन उलूपी और चित्रांगदा को देखकर प्रसन्न हो जाता है। तब उलूपी अर्जुन को देखकर इस प्रकार कहती है- ''हे प्राण नाथ! आप ने कभी

गलत काम नहीं किए थे। लेकिन कुरुक्षेत्र युद्ध में शिखंडी को आगे रखकर भीष्म को गिराने के कारण आप को पाप लग गया है। उस पाप का प्रायश्चित किए बिना अगर आप मृत्यु को पाएँगे तो आप को नरक लोक जाना पड़ता है। इसलिए अपने ही पुत्र के हाथों में हारे जाने के कारण अब आप पाप मुक्त हो गए हैं।''

''हे नाथ! मैं आपको पूरी बात विस्तार पूर्वक समझाऊँगी। एक दिन मैं गंगा में स्नान करने गयी थी। उसी घाट पर वसु (भीष्म के सात भाई) भी नहाने आए। तब वे मानव रूप में गंगा मैया से कहने लगे कि अर्जुन ने शिखंडी को आगे रखकर भीष्म का सामना किया। तो अपने नियम के अनुसार भीष्म ने बाण प्रयोग नहीं किया। इसलिए अर्जुन ने उत्तम बाण प्रयोग करके उन्हें गिराया। यह अर्जुन का अधम विजय है। इसलिए अर्जुन मरने के बाद हम उन्हें उत्तम लोकों में जाने से रोक लेंगे। मैं उनकी बातों को सुनकर डर गयी।

जल्दी से घर जाकर अपने पिता को सारी बातें कह सुनायीं। तब मेरे पिता वसुओं से प्रार्थना करने पर वे अपने गुस्से को छोड़कर मेरे पिता से इस तरह बोले अगर हमें अर्जुन को छोड़ना है तो वह अपने ही पुत्र के हाथों से हार जाना चाहिए। आज आप बभ्रुवाहन के हाथों से हारे जाने पर ही पाप मुक्त हो सकते थे।

इसीलिए मैं समय की प्रतीक्षा में थी। बभ्रुवाहन आप से लड़ने के लिए हिचकिचाते हुए मैंने अपने दिव्य ज्ञान से जान लिया। मुझे वसुओं की बातें ध्यान में आयी। मुझे लगा कि अगर यह मौका छूट गया तो फिर आप पिता पुत्र के बीच में युद्ध का अवसर कभी नहीं आएगा। इसलिए मैंने शीघ्र ही पृथ्वी लोक में आकर बभ्रुवाहन को आपसे युद्ध करने के लिए प्रोत्साहित किया। और आप को हराने के लिए विशेष शक्ति को भी प्रदान किया।''

यह सब सुनकर अर्जुन बहुत खुश हो गये। बाद में सबको अश्वमेध यज्ञ में भाग लेने के लिए निमंत्रण देकर अश्व को लेकर आगे निकल पड़े। उसके बुलावे पर उलूपी हस्तिनापुर पहुँचती है। तब से लेकर अर्जुन भाइयों और द्रौपदी सहित स्वर्गारोहण के लिए जाते समय तक वहीं पर रहती है और बाद में अपना नागलोक वापस लौटती है।

इस प्रकार उलूपी एक नाग कन्या होने पर भी मानव अर्जुन से प्यार करने के कारण उससे शादी करके उसकी पत्नी बन जाती है। तब से हमेशा अर्जुन के कुशल क्षेम पर ध्यान रख कर अपने सतीत्व की रक्षा करती है। उलूपी इस रूप में एक आदर्श पत्नी का उदाहरण प्रस्तुत करती है।

अप्रैल-2023 महीने का क्विज-9 के समाधान

1) श्री कोदंडरामस्वामीजी, **2)** एकशिलानगरम,

3) दशरथ, **4)** बारह साल,

5) परशुराम, **6)** अर्जुन,

7) गाय के दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोबर

8) गोकर्ण क्षेत्र में, **9)** भगवान शिव जी

10) गंगा नदी, **11)** भक्त प्रह्लाद,

12) कुरुक्षेत्र, **13)** पुरुषोत्तम नायकी,

14) संजीवी विग्रह विमान,

15) नित्यपुष्करिणी, कनकतीर्थ.

ऋषि-मुनि

महर्षि पुलस्त्य

-डॉ.जी.सुजाता

हिन्दू धार्मिक ग्रंथों एवं मान्यताओं के अनुसार ब्रह्म के मानस पुत्रों में महर्षि पुलस्त्य भी एक है। इनकी गणना शक्तिशाली महर्षियों में की जाती है। ये ज्ञानी, तपस्वी व दैवीय संपत्ति के स्वामी थे। ये अपनी तपस्या, ज्ञान और दैवी सम्पत्ति के द्वारा जगत के कल्याण के सम्पादन में लगे रहते हैं। विश्व कल्याण ही इनका एकमात्र लक्ष्य था। ऋषि पुलस्त्य योग विद्या के भी ज्ञाता थे।

विष्णु पुराण के अनुसार ये ऋषि उन लोगों में से एक हैं जिनके माध्यम से कुछ पुराण आदि मानव जाति को प्राप्त हुए। उनके अनुसार इन्होंने ब्रह्म से विष्णु पुराण सुना था और उसे पराशर ऋषि को सुनाया, और इस तरह ये पुराण मानव जाति को प्राप्त हुए।

ऋषि पुलस्त्य ने ही देवर्षि नारद को वामन पुराण की कथा सुनायी है।

अपने पिता भगवान ब्रह्म की आज्ञा से महर्षि पुलस्त्य ने प्रजापति दक्ष की कन्या प्रीती और प्रजापति कर्दम की कन्या हविर्भुवा से विवाह किया। कर्दम प्रजापति की कन्या हविर्भुवा से इन्हें विश्रवा नाम का एक पुत्र प्राप्त हुआ। यह विश्रवा यक्ष एवं राक्षस जाति के जनक थे।

विश्रवा की दो पत्नियाँ थी पहली पत्नी का नाम कैकशी जो राक्षस सुमाली और राक्षसी तड़का की पुत्री थी। जिससे रावण, कुम्भकर्ण तथा विभीषण नामक तीन पुत्र और शूर्पनखा नामक एक पुत्री की प्राप्ति हुई।

दूसरी पत्नी थी इलाविडा - जो चक्रवर्ती सम्राट तृणबिन्दु की अलमबुशा नामक अप्सरा की पुत्री थी, जिससे कुबेर उत्पन्न हुए। यही कुबेर यक्षों के सम्राट बने।

संध्या, प्रतीची, प्रीति भी इनकी पत्नियों में शामिल थीं।

पुलस्त्य के कई पुत्र थे किन्तु दो पुत्र ऐसे रहे जिन्होंने अपने तप से देवत्व को प्राप्त किया। इनके पहले पुत्र थे दत्तोलि जो आगे चलकर स्वयंभु मन्वन्तर में महर्षि अगस्त्य के नाम से प्रसिद्ध हुए। महर्षि अगस्त्य अपने पिता के समान ही तेजस्वी थे और हिन्दू धर्म के सर्वाधिक प्रभावशाली ऋषियों में भी उनका नाम सर्वोपरि है।

इसके अतिरिक्त विष्णु पुराण में इनके एक पुत्र निदाघ का भी वर्णन आता है जिसने महर्षि ऋभु से तत्वज्ञान को प्राप्त किया था। इस प्रकार महर्षि पुलस्त्य यक्षों और राक्षस दोनों के आदि पुरुष थे।

कहा जाता है कि ये राजा दक्ष के दामाद और भगवान शंकर के साढू थे। यह भी कहा जाता है कि सती दाह के बाद जब दक्ष यज्ञ का विध्वंस किया गया तो ये जलकर मर गए थे। वैवस्वत मनु के मन्वंतर में ब्रह्म के सभी मानस पुत्रों के साथ पुलस्त्य का भी पुनर्जन्म हुआ था।

इन्होंने महादेव को तप से प्रसन्न किया और उनसे लंका में अपने तप हेतु एक स्थायी स्थान प्राप्त किया।

महर्षि पुलस्त्य के विवाह के विषय में पुराणों में एक रोचक कथा भी है। कथा के अनुसार एक बार वे मेरु पर्वत पर तपस्या कर रहे थे। वहाँ रहने वाली अप्सरसाएँ बार-बार वहाँ आकर हास-परिहास करती थी जिससे उनके तप में विघ्न पड़ता था। इससे क्रोधित होकर उन्होंने उन को श्राप दे दिया कि जो कोई भी कन्या उनके सामने आयेगी वह गर्भवती हो जाएगी। इस श्राप

से घबराकर अप्सरसाओं ने वहाँ आना बंद कर दिया। किन्तु एक दिन वैशाली राजा की कन्या, जिसे इस श्राप के बारे में पता नहीं था, भूलवश महर्षि के समक्ष आ गयी जिससे वह गर्भवती हो गयी। तब बाद में महर्षि पुलस्त्य ने उससे भी विवाह किया।

अपनी दुष्टता के कारण रावण को एक समय कार्तवीर्य सहस्त्रार्जुन ने बंदी बना लिया था। तब ये ही अपने पोते को बचाने गए थे। उनकी आज्ञा सुनते ही सहस्त्रार्जुन जिसके सामने बड़े-बड़े देवता और वीर पुरुष नतमस्तक हो जाते थे, उनकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सका। इनके तपोबल के सामने बेबस उसका सिर झुक गया और रावण को बंदीगृह से मुक्त कर दिया।

एक बार पराशर को राक्षसों पर बहुत क्रोध आया। क्योंकि उनके पिता की शक्ति को एक राक्षस ने हर लिया था। उन्होंने उनका सर्वनाश करने के लिए एक यज्ञ का आयोजन किया। ऐसे समय में पराशर के दादा वशिष्ठ ऋषि चिंतित हुए। उन्होंने परामर्श देकर

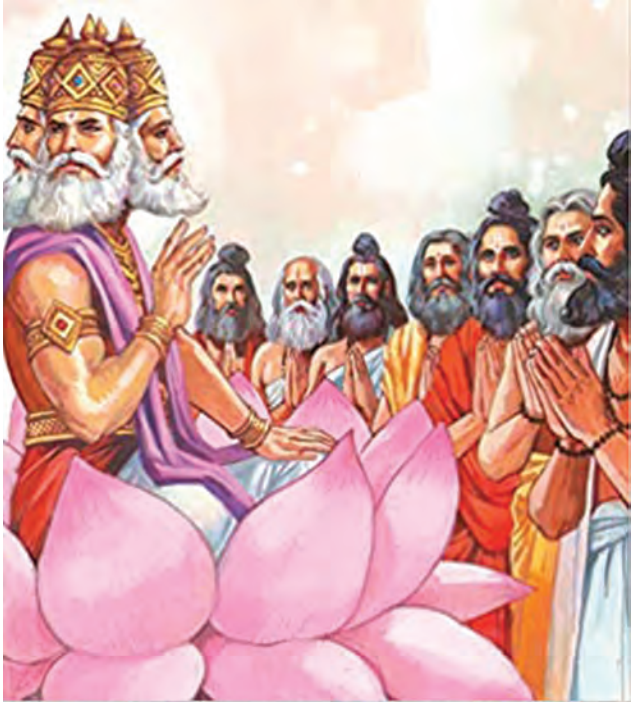

पुलस्त्य से उपदेश करवाया। पराशर ऋषि ने पुलस्त्य द्वारा कही सब बातों को मानते हुए अपना यज्ञ रोक दिया। जब यह सूचना पुलस्त्य महर्षि तक पहुँची, तो वह अत्यंत प्रसन्न हो गए। उन्होंने पराशर पर अपनी अनेक मेहरबानियाँ कर दीं, आशीर्वाद भी दिया, जो पराशर ऋषि के लिए महान उपलब्धि थी।

महर्षि पुलस्त्य का वर्णन पुराणों में तथा महाभारत के अनेक स्थानों पर मिलता है। महाभारत काल में दुर्योधन के 100 भाई भी इन्हीं के वंश के कहे गए हैं। पौराणिक कथाओं में इनके भीष्म को ज्ञान देने का भी उल्लेख मिलता है। ब्रह्माजी की आज्ञा से पुलस्त्य ऋषि ने भीष्म को ज्ञान दिया था। भगवान के अवतार ऋषभदेव ने बहुत दिनों तक राज्य पालन करने के पश्चात् अपने ज्येष्ठ पुत्र भरत को राज्य देकर जब वनगमन किया तब उन्होंने महर्षि पुलस्त्य के आश्रम में रहकर ही तपस्या की थी।

गोवर्धन को दिया श्राप

पुराणों के अनुसार, पुलस्त्य ऋषि ने ही गोवर्धन पर्वत को शाप दिया था। गोवर्धन पर्वत को गिरिराज पर्वत भी कहा जाता है। गोवर्धन पर्वत पर मोहित होकर वे उन्हें काशी ले जाना चाहते थे। इससे दुखी गोवर्धन रास्ते में ब्रज के आने पर ही भारी होकर वहीं स्थापित हो गए। इसके बाद साथ चलने पर मना किया तो पुलस्त्य ऋषि ने उन्हें हर दिन मुट्ठी भर छोटा होने का श्राप दे दिया। कहा जाता है कि उस श्राप की वजह से अब भी गोवर्धन का आकार लगातार घट रहा है।

जगत को चलाने, इसकी रक्षा करने, पालन करने, दिशा-निर्देश देने, सुख व शांति प्रदान करने में महर्षि पुलस्त्य का सक्रिय योगदान अभी भी माना जाता है। वे सदा विश्व कल्याण के लिए ही काम करते रहे। पुराणों में उन का यही छवी उज्वलमय दिखाई देता है।

आयुर्वेद

पपीता के स्वास्थ्य के लिए लाभ

- डॉ.सुमा जोषि

पपीता, Caricaceae परिवार के Carica जीनस में 21 स्वीकृत प्रजातियों में से एक है। 'Papaya' शब्द अरावाक से स्पेनिश के माध्यम से आता है। यह वह जगह भी है जहाँ पपाव और पावपाव आते हैं। Latin name है Carica papaya.

पपीते को अपने खाने में शामिल करने के कई कारण हैं। पोषण सामग्री में उच्च होने के साथ, आयुर्वेद भी इस मीठे और मुह में पिपल जानेवाले फल की सिफारिश करता है और वात और कफ को प्रभावी ढ़ंग से संतुलित करता है। पपीता को मधुकरकटी, गोपालकरकटी, पपीया, पाप्पया, खरबूजे का पेड, पपीत, पिरंगी ऐसे अनेक नामों से जाना जाता है।

पपीता एक छोटा, कम शाखाओं वाला पेड है। आमतौरपर 5 to 10 m लम्बा एक ही तना होता है। जिसमें व्यवस्थित रूप से पत्तियाँ सीमित होती हैं। निचला तना स्पष्ट रूप से झुलसा हुआ है जहाँ पत्तें और फल होते हैं। पत्तियाँ 50 to 70 cm व्यास की होती हैं, गहराई से ताड के आकार की होती हैं। जिसमें सात लोब होते हैं। सभी पौधों के हिस्सों में दूध जैसा होता है जिसे लेटेक्स कहते हैं।

पपीते में विविध प्रकार के रासायनिक संघठन पाये जाते हैं। इसके छिलके, गूदे और बीजों में विभिन्न प्रकार के फाइटोकेमिकल्स होते हैं, जिनमें कैरोटेनॉयड्स और पॉलीफेनोल्स शामिल हैं। साथ ही साथ बेजांइल आइसोथियोसाइनेट्स और बेजांइल ग्लूकोसाइनेट्स, त्वचा और गूदे के स्तर के साथ जो पकने के दौरान बढ़ जाते हैं पीली त्वचा में कैरोटेनॉयड्स, ल्यूटिन और बीटा-कैरेटीन प्रमुख हैं, जबकि लाइकोपीन फल के गूदे में प्रमुख है। पपीते के बीज में सायनोजेनिक पदार्थ भी होता है।

आयुर्वेदिक गुणधर्म

पत्ते का रस (स्वाद) - कटू (तीखा), तिक्त (कडवा)। गुण (गुण) - लघु (पाचन के हलका), सूखा, तीखा। विपाक-कटु (पाचन के बाद तीखे स्वाद परिवर्तन से गुजरता है)। वीर्य - उष्णा। कर्म - कफ वातहर (कफ और वात दोष को शान्त करता है), हृदय के लिए लाभदायी है।

उपयोज्यांग : फल, पत्ती, लेटेक्स, बीज।

मात्रा बनाने की विधि

1) पत्ते का आसव - 40 to 80 m

2) बीज पाउडर - 0.5 to 1 gm.

3) लेटेक्स - 3 to 6 gram.

पपीता कैसे खाना चाहिए?

इसके फलों का सेवन आसानी से किया जाता है। फलों के सलाड में केला, सेब आदि के साथ फलों को एक घटक के रूप में डाला जाता है। अतिरिक्त स्वाद के लिए फलों पर काली मिर्च पाउडर छिडका जाता है। इसके फलों का रस कुछ इलायची डालकर तैयार किया जाता है।

पपीते के उपयोग

कच्चे पपीते के दूध को मुँह के छालों, बिच्छू के काटे हुए स्थान पर लगाने से दर्द में आराम मिलता है, घाव और खुनी बवासीर में भी उपयोग किया जाता है। पपीते के पके फल का सेवन कब्ज दूर करने के लिए किया जाता है। पपीते के पौधे की पत्तियों को हल्का गर्म करके शरीर के किसी भाग पर लेप करने से दर्द और सूजन में आराम मिलता है।

दाद जैसे त्वचा रोगों को दूर करने के लिए कच्चें पपीते का दूध स्थानीय रूप से लगाया जाता है। पपीते के फल का सेवन दिल की मांसपेशियों को मजबूत बनाने के लिए किया जाता है।

पपीता परजीवी कृमियों के विकास को रोकता है और उन्हें जठरान्त्र संबंधी मार्ग से बाहर निकालता है। पपीते की पत्तियों का रस ग्लूकोज के अवशोषण को बढ़ाता है और रक्त शर्करा के स्तर को नियन्त्रित करता है। यह अग्नाशयी बीटा कोशिकाओं के पुनर्जनन को भी उत्तेजित करता है।

पपीता दान्त दर्द के लिए सबसे अच्छा घरेलू उपाय है। पपीते की जडों का पेस्ट बनाकर मसूडों और दांतों पर मलें और दांत दर्द से राहत पायें। पपीता दांतों से सूक्ष्म जीवों को खत्म करने में मदद करता है और उपचार प्रक्रिया में मदद करता है। यह माना जाता है कि पपीता कैंसर के विकास से लडने में मदद करता है क्योंकि यह मुक्त क्रांतिकारियों को मार सकता है। कैंसर का इलाज करा रहे लोगों को भी इस फल की सलाह दी जाती है।

पपीता कई परजीवी रोगों से लडता है और आंत्र के कीडे को मारता है। जिससे कई संक्रमण होते हैं। लाइकोपीन और विटामिन-सी से भरपूर पपीता उम्र ज्यादा होने के लक्षणों को कम करने मदद करता है।

पपीता हमारे चयापचय को विनियमित करने में मदद करता है और हमारे शरीर को वसा को अवशोषित करने से रोकता है। इससे मोटापे को रोकने में मदद मिलती है।

पपीते के पेड की पत्तियों को गर्म करके गर्म पुल्टिस के रूप में गठिया के प्रभावित जोडों पर लगायें। बीजों को पीसकर चूर्ण बना लें, कृमियाँ के इलाज के लिए इसे आन्तरिक रूप से (केवल पर्यवेक्षण के साथ) लिया जा सकता है।

पपीता किसे नहीं खाना चाहिए?

1) गर्भवती महिलाएँ। 2) अनियमित दिल की धडकनवाले लोग। 3) पपीता से एलर्जीवाले लोग। 4) गुर्दे की पथरीवाले लोग। 5) हाइपोग्लाइसीमिया वाले लोग।

पपीता ज्यादा खाने से... ये सब हो सकता है?

1) त्वचा में खराश।
2) एलर्जी की प्रतिक्रिया।
3) गर्भशय संकुचन (गर्भपात)।
4) कैरोटेनीमिया (त्वचा का रंग उडना, तलवों और हथेलियों का पीला पडना)।
5) पचनक्रिया खराब होती है।
6) सांस लेने में कठिनाई या घरघराहट (सांस लेने के दौरान सीटी की आवाज आना)।
7) नाक बन्द होना हो सकता है।

कई स्वास्थ्य विशेषज्ञ पपीते के पत्तों के रस को डेंगू बुखार के इलाज के लिए एक प्रभावी उपाय के रूप में सुझाते हैं। यहाँ पर जानकारी के लिए दिया गया है। स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें।

आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य
आयोजक - आचार्य के.सूर्यनारायण
हिन्दी में निर्वहण - डॉ.सी.आदिलक्ष्मी

षड्विंशः पाठः - छब्बीसवाँ पाठ

चोष्यम् = चुसने योग्य
गत्वा = जाकर
नीत्वा = लेकर के
गमिष्यति = जायेंगा
चुक्रम् = इमली
सूपम् = दाल
आगत्य = आकर के
नेष्यति = ले जायेगा

गमिष्यति = जायेगा
नेष्यति = ले जायेगा
आनयति = लेकर आता है

प्रश्न : (अ)

1. चोष्ये लवणं नालम्।
2. सूपः सम्यगस्ति।
3. गृहे चुक्रमस्ति किम्?
4. त्वं तत्र गत्वा किञ्चित् चुक्रमानय।
5. रामः आनयतु। अहं रामठम् आनेष्यामि?
6. यूयम् अस्मद्गृहम् आगमिष्यथ किम्?
7. तथैवागमिष्यामः।
8. त्वं शीघ्रं गच्छ।
9. ते सर्वेऽपि अस्मद्गृहे भोजनार्थमागमिष्यन्ति।
10. सूपः अपि नास्ति, कथं करिष्यन्ति वा?

जवाब : (अ)

1. शोरबा में नमक पर्याप्त नहीं है।
2. दाल अच्छी है।
3. घर में इमली है, क्या?
4. तुम वहाँ जाकर थोडी इमली लाओ।
5. राम आने के बाद मैं हींग लाऊँगा।
6. तुम दोनों हमारे घर आयेंगे क्या?
7. वैसे बिल्कुल आयेंगे।
8. तुम जल्दी जाओ।
9. वे सब हमारे घर खाना खाने के लिए आयेंगे।
10. दाल भी नही है, कैसे करेंगे?

प्रश्न : (आ)

1. तुम खाना बनाती हो।
2. मैं पानी पीता हूँ।
3. फिर आप सब स्नान करके भोजन करें।
4. जाओ और हमारे पिता को ले आओ।
5. मैं वहाँ रहूँगा।
6. आप देर से आए हैं।
7. जल्दी आओ। (शीघ्र)
8. तुम मेरे भाई को ले आओ।
9. बच्चों को जल्दी उठा लें।
10. मैं भी ला सकता हूँ।

जवाब : (आ)

1. त्वं पाकं कुरु।
2. अहं जलम् आनेष्यामि।
3. तदनन्तरं यूयं सर्वे स्नानं कृत्वा भोजनं करिष्यथ।
4. यूयं गत्वा अस्मत् पितरं आनयथ।
5. अहं तत्रैव वसामि (भवामि)
6. यूयम् अत्र आलस्यं मा कुरुथ।
7. वेगेन (त्वरया) आगच्छथ। (शीघ्रं)
8. त्वं अस्मद् अग्रजम् आनय।
9. बालकाम् शीघ्रं स्वीकृत्य गच्छथ।
10. तथैव स्वीकृत्य आनेष्यामि। (अस्तु स्वीकृत्य आनेष्यामि।)

जून महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेष राशि - यह माह आपके लिए मध्यम फलदायक रहेगा। अपनों की चिंता, स्वास्थ्य सुख। अपनी सूझ-बूझ से सभी व्यावसायिक समस्याओं का समाधान आसानी से हल कर सकेंगे। छात्रों के लिए करियर संबंधी कोई बड़ी सफलता मिलेगी। आर्थिक विकास, दांपत्य जीवन सुखमय। निर्माण कार्य में सफलता। जीवन में लोगों का सहयोग मिलता रहेगा।

वृषभ राशि - अपनी इच्छाएँ पूरी करने की कोशिशें कारगर साबित होंगी। स्वास्थ्य के ऊपर ध्यान दें, आप शांत मन से काम करेंगे तो आपको काफी फायदा होगा। गृहस्थ जीवन सुखी, संतान का सुख। पैसों का फायदा होने और कार्यक्षेत्र में कोई उपलब्धि मिलने का योग बन रहा है। विरोधी पक्ष आपके मन को कार्य से दूर करने की कोशिश करेगा।

मिथुन राशि - वाणी एवं व्यवहार के बल पर व्यक्तिगत जिम्मेदारियों का उचित निर्वहन कर पायेंगे। समय से पहले ही कार्यों को पूर्ण करने में जुट जाएँगे। साहस-पराक्रम की अधिकता, व्यापारिक सफलता, संतान की उन्नति जिससे मन प्रसन्न रहेगा। मान-सम्मान प्रतिष्ठा में सफलता।

कर्कटक राशि - स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। मन में कुविचार आने से क्रोध उत्पन्न होगा। अधिकारी वर्ग भी गर्म हो सकते हैं। परिवार के लिए आप महत्वपूर्ण रहेंगे। आर्थिक लाभ, निर्माण कार्य में प्रगति, व्यर्थ की यात्रा। संतान की प्रगति। कार्य क्षेत्र पर कम समय देने के बाद भी संतोषजनक धन लाभ। मित्र और रिश्तेदारों से घर में चहल पहल बनी रहेगी।

सिंह राशि - यह माह आपके लिए मिला जुला रहेगा। काम काज बेमन से करने पड़ेंगे। व्यवहार में भी रुखापन रहने से संबंधों में खटास रहेगी। व्यक्तिगत जिम्मेदारियों का उचित निर्वहन होगा। अनावश्यक वाद-विवादों से बचें। आमदनी कम खर्च अधिक। पुराने कार्यों को पूर्ण करने के बाद ही नए कार्य हाथ में लें। परिवार में तनाव रह सकता है। नौकरी सुखद। प्रतिष्ठा में वृद्धि।

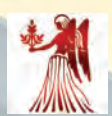

कन्या राशि - स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। इष्ट मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। जिसी भी कार्य को करने की ठानेंगे। उससे हानि-लाभ की परवाह किये बिना पूरा कर पायेंगे। रोजी-रोजगार के क्षेत्रों में सफलता। धार्मिक-सामाजिक कार्यों में अभिरुचि।

तुला राशि - यह माह आपके लिए कुछ कष्टदायक होगा। मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य चिंता। वाणी में कठोरता रहने से घर-कार्यालयों में कलह रहेगा। निरर्थक वाद-विवाद, आर्थिक क्षति। कार्य क्षेत्र से अल्प लाभ से संतोष करना पड़ेगा। आर्थिक लेन-देन सोच समझ कर करें। संतान पर ध्यान देने की आवश्यकता है। स्त्री से संबंध भावनात्मक रहेंगे।

वृश्चिक राशि - आपको कड़ी मेहनत करनी होगी। आर्थिक मामलों में पूरी सावधानी और सतर्कता से रहे। आय के मार्ग अभी मंद ही रहेंगे। दैनंदिन जीवन में व्यतिक्रम, गृह-भूमि, कृषि कार्यों में श्रमाधिक्य, व्यापार सामान्य रहेगा। कारोबारी जितना हो अपने कारोबार से जुड़ी बातों को किसी से साझा न करें।

धनुष राशि - शरीर स्वस्थ रहेगा। कारोबार में लाभ होगा, पारिवारिक सुख, वाहनादि का लाभ संभव है। संतान पक्ष की उन्नति, भूमि मकानादि का लाभ संभव है। नौकरी में पदोन्नति, कृषि कार्यों में अनुकूलता। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, विद्यार्थियों के लिए मास अनुकूल रहेगा। भौतिक सुख सुविधा में वृद्धि। आकस्मिक धन लाभ, सुखद वातावरण रहेगा।

मकर राशि - स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। शत्रु प्रबल होंगे, कार्य में अल्प बाधा संभव है। कुटुम्बियों से असन्तोष, विरोधियों से सचेत रहे। दाम्पत्य जीवन में क्लेश रहेगा। स्त्री व संतान सुख, विद्या-वृद्धि का विकास। नौकरी में स्थानांतरण की संभावना, कारोबार में वृद्धि। व्यापार में लाभ एवं उन्नति। मनोरंजन के साधनों के प्रति रुचि।

कुंभ राशि - अल्प बाधा संभव है, मानसिक शारीरिक कष्ट संभव है। व्यापार में उतार-चढ़ाव रहेगा, चतुरता से शत्रुओं पर विजय। अनावश्यक वाद-विवाद, तनाव, खर्च से चिंता, कारोबार में अल्प लाभ मिलेगा। अपनों का असहयोग जिससे उदासीनता। ऋण भार बढ़ेगा। धर्म कार्य करें। मातृ पक्ष से कष्ट, दाम्पत्य जीवन में क्लेश होगा।

मीन राशि - भौतिक सुख सुविधा में वृद्धि। इष्ट मित्रों से सहयोग मिलेगा। आकस्मिक लाभ, स्वास्थ्य लाभ। शैक्षणिक अभिरुचि, संतान पक्ष की चिंता, भूमि-मकानादि का लाभ। मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि। क्रोध, जल्दबाजी में हानि होगी। विवेकपूर्ण निर्णय से लाभ होगा। नौकरी में प्रसन्नता एवं स्थानान्तरण की संभावना।

नीतिकथा

परिश्रम का धन

श्री के.रामनाथन

रामपुरम् नामक गाँव में अनिल और सुनिल नामक दो भाई रहते थे। अनिल बड़ा और सुनिल छोटा भाई था। अनिल बचपन से ही कठोर परिश्रमी था और अपने परिश्रम से बड़ा व्यापारी बना हुआ था, पर सुनिल आलसी था, इसलिए वह रोजी रोटी के लिए भी तडपता था। दोनों का विवाह हो गया था। एक दिन सुनिल की पत्नी ने अपने पति को समझाया कि पास के जंगल में लकडी काटकर लाये तो उसे बेचकर थोडा पैसा कमा सकते हैं और अपनी भूख को मिटा सकते हैं। यह सुनकर सुनिल घर से निकला। रास्ते में उसे एक साधू से मिला और उनके चरण छूकर उस ने नमस्कार किया। तब साधू ने उसे आशीर्वाद देते हुए कहा, ''वत्स! तुम आज अपनी गलती से सत्य को समझ सकते हो।''

सुनिल को साधु की बात समझ में नहीं आयी। उसने सीधे अपने भाई अनिल से मिलकर कहा, ''भाई, मुझे आपकी ओर से एक मदद चाहिए।'' अनिल ने पूछा, ''क्या चाहिए?'' तब सुनिल ने कहा, ''भाई आज से मैं परिश्रम करने को तैयार हूँ। आज जंगल में जाकर लकडी काटकर लाना चाहता हूँ। उसके लिए आपके पास के घोडों में एक को देकर मेरी मदद कीजिए।'' यह सुनकर अनिल को उस पर गुस्सा आ गया। उसने सोचा कि इसकी यदि एक बार मदद करें तो यह बार-बार आकर तंग करेगा। इसलिए उसने बडी कठोरता से कह दिया, ''मैं सिर्फ इस बार ही मदद कर सकता हूँ और आगे कुछ नहीं करूँगा। मैं घोडा देता हूँ, पर उसे उसी हालत में वापस करना चाहिए।'' सुनिल ने उसकी बात मान ली और घोडे के साथ जंगल की ओर निकल पडा। उसको चलते समय रास्ते में ही याद आयी कि लकडी काट कर लाने के लिए वह भाई से गाडी माँगना भूल गया। उसको इस बात का भी डर था कि दूसरी बार भाई से मिलकर माँग करें तो उस पर अधिक गुस्सा कर सकता है।

वह सिर्फ घोडे के साथ जंगल गया और लकडियाँ काटकर बडा गट्ठर बना दिया। परंतु उसे घोडे पर लाद कर ले आना मुश्किल हो गया। इसलिए उसने उस गट्ठर को घोडे की पूँछ पर बाँध दिया और स्वयं घोडे पर सवार होकर उसे तेज दौडाने लगा। रास्ते में अनेक गड्ढे थे और इसलिए घोडा धीरे-धीरे चल रहा था। यह देखकर सुनिल ने घोडे को तेज दौडाने के लिए उसे चाबूक से मारकर तेज भगाने लगा। चाबुक के असह्य दर्द के मारे घोडा तेज दौडने लगा। इतने में वह लकडी का गट्ठर एक झुरमुठ में फंस गया और घोडे के लिए उसे खींचकर आगे दौडना मुश्किल हो गया। सुनिल को इस का पता नहीं था। वह तो घोडे को तेज दैडाने में ही लगा था। इस आपाधापी में गट्ठर के तेज खींचने से घोडे की पूँछ कट गयी। दर्द के मारे घोडा और भी अत्यधिक वेग से दौडने लगा।

आखिर सुनिल अपने भाई के यहाँ आ पहुँचा और घोडे को वापस दे दिया। बिना पूँछ के घोडे को देखकर अनिल की आँखें लाल हो गयीं और वह सुनिल को पकडकर पंचायत में दंड दिलाने के लिए तैयार हो गया। यह जानकर सुनिल अपने आप को बचाने के लिए तेज भागने लगा। भागते भागते वह एक नदी के

पुल पर चढ गया। पीछे भाई को तेज आते देखकर वह पुल से नीचे नदी में कूद पडा। उस समय नदी के एक नाव में एक युवक और उसके बूढे पिता दोनों बैठे हुए थे। पुल से गिरनेवाला सुनिल सीधे उस बूढे आदमी पर आ गिरा और वह बूढा पिता वहीं मर गया। यह देखकर उस बूढे बेटा का चौंक उठा और सुनिल को पकडकर पंचायत में दंड दिलाने के लिए निकल पडा।

पंचायत में पंच ने उन दोनों की शिकायतों को ध्यान से सुना। उन्होंने अपना फैसला सुनाते हुए कहा, ''अनिल! तुम ऐसा करो, तुम्हारे घोडे की पूँछ बढने तक उसे अपने छोटे भाई सुनिल के पास सौंप दो।'' फिर पंच ने युवक को देखकर कहा, ''बेटा! तुम ऐसा करो, जिस प्रकार तुम्हारे पिताजी मारे गये वैसे ही तुम इसे मार सकते हो। तुम उसे पुल के नीचे नाव पर बिठा दो और तुम पुल से नीचे उस

पर कूदकर उसको मार दो। यही हमारा फैसला है। तुम दोनों को इसका पालन अवश्य करना चाहिए।।'' पंच के फैसले से वे दोनों स्तब्ध रह गये।

उसके बाद अनिल ने अपने भाई से मिलकर कहा, ''सुनिल! मैं तुमको सौ रुपये देता हूँ, मुझे वह घोडा वापस लौटा दो।'' उसके बाद सुनिल ने भाई से पैसे ले कर घोडे को वापस लौटा दिया। यह देखकर वह युवक भी सुनिल से मिला और कहा, ''अरे भाई! उस ऊँचे पुल से कूदना मेरे लिए असंभव है। मैं तुमको सौ रुपये दे देता हूँ तुम मुझे छोड दो।'' सुनिल उससे भी रुपये ले कर वहाँ से निकल पडा।

अब सुनिल को साधू की बात याद आयी और उसने मन में सोचा कि मुझे प्राप्त यह धन न्याय का धन नहीं है। अपने परिश्रम से प्राप्त धन ही मूल्यवान है। मैं आगे से कठोर परिश्रम करके धन कमाऊँगा। इतना सोचकर वह अपने भाई से मिलकर उसका रुपया वापस करते हुए अपनी गलती के लिए माफी माँगी। वैसे ही वह उस युवक से मिलकर उसका रुपया वापस देते हुए अपनी गलती के लिए माफी माँगी।

यह सब करने के बाद वह लौटकर साधू के पास आया। साधू ने उसे मुस्कुराते हुए आशीर्वाद दिया। तब सुनिल ने उन्हें अपनी सारी घटनाओं को सुनाया। सब सुनकर साधू ने उसे आशीर्वाद देते हुए कहा, ''अब तुम्हारी आँखें खुल गयी हैं। तुम को परिश्रम का मूल्य मालूम हो गया है। तुम अपने परिश्रम से अपने जीवन में आगे बढो।'' साधू के आशीर्वाद से सुनिल अत्यंत प्रसन्न हुआ। आगे अपने जीवन में सदा परिश्रम करता रहा।

चित्रकथा

एकादशी

तेलुगु मूल - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री के.द्वारकनाथ

मुरासुर की यातनाओं से त्रस्त होकर देवता गण और भूदेवी दोनों ने ब्रह्मदेव की प्रार्थना की। 1

हे भगवान! मुरासुर का वध करके हमारी बाधाओं को दूर कीजिए। 2

भूदेवी ने रोते हुए अपने कष्टों के बारे में ब्रह्म देव को बताया--- 3

देव! मुरासुर के पापों के भार को मैं वहन नहीं कर सकती हूँ। 4

कैलास जाकर शिव से प्रार्थना करेंगे। 5

भूदेवी और देवता गण ब्रह्म को साथ लेकर कैलास गए। हे शंकर! मुरासुर का वध करना चाहिए। 6

मुरासुर का वध श्रीहरि को ही करना चाहिए। चलो सब वैकुंठ चलेंगे। 7

सभी वैकुंठ चले गए। 8

हे श्रीहरि! मुरासुर का वध करके हमें बाधाओं से मुक्त कीजिए। 9

विष्णु ने अभय दिया। 10

आप निश्चिंत रहिए। 11

विष्णु गरुडवाहन पर चढकर युद्ध करने गये। मुरासुर और विष्णु भगवान के बीच में घमासान युद्ध हुआ। तब विष्णु ने कहा... 12

मैं बहुत थक गया हूँ। मुझे आराम चाहिए। 13

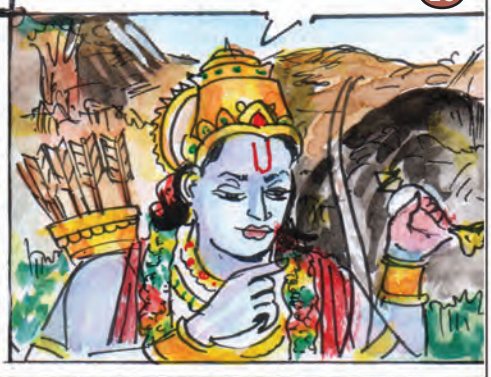

तब विष्णु बदरीकाश्रम जाकर एक गुफा में आराम करने लगे। तब उनके शरीर में से एक अपूर्व सुंदरी का उद्भव हुआ। मुरासुर विष्णु को ढूँढते हुए वहाँ आया। 14

सुंदरी पीछे मुडकर खडी हो गयी। गुफा में मुरासुर की आवाज सुन कर सुंदरी ने पलट कर देखा। उस के दृष्टिपात से ही मुरासुर जलकर राख का ढेरा बन गया। 16

विष्णु ने उस सुंदरी को 'एकादशी' का नाम दिया। विष्णु ने सुंदरी से कहा... 18

महिने के हर पक्ष के ग्यारहवें दिन को उपवास की दीक्षा रखनेवाले सभी को वैकुंठ की प्राप्ति होनी चाहिए। 20

स्वस्ति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान,
तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे. प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम...
लिंग/आयु..........., चंदा नंबर.......................
पता...
....
मोबाइल नं..

क्विज-11

1) भारत में पूरी जगन्नाथ मंदिर कौन से राज्य में स्थित है?
ज)..
2) जगन्नाथ मंदिर में मनाये जानेवाला विश्व प्रसिद्ध उत्सव कौन सा है?
ज)..
3) रथ यात्रा में जगन्नाथ स्वामी के साथ विराजित होनेवाली दो अन्य मूर्तियों के नाम क्या है?
ज)..
4) क्षीरसागर से सीधे भूलोक पधारकर विराजित भगवान कौन है?
ज)..
5) राजा तोंडमान ने पद्मसरोवर की गाथा को कौन-से महर्षि के द्वारा सुना था?
ज)..
6) तिरुवालि-तिरुनगरि के क्षेत्र में विराजित उत्सवमूर्ति का नाम क्या है?
ज)..
7) तिरुवालि-तिरुनगरि क्षेत्र में हुए विमान गोपुर का नाम क्या है?
ज) ....
8) तिरुनगरि क्षेत्र में विराजित (माताजी) तायार का नाम क्या है?
ज) ....
9) चातुर्मास के समय में श्री महाविष्णु कौन सी स्थिति में रहते हैं?
ज)..
10) यक्षों के सम्राट कौन हैं?
ज)..
11) अनिल और सुनिल कौन-से गाँव में वास करते हैं?
ज)..
12) अपनी यातनाओं को सुनाने भूमाता देवताओं के साथ किस भगवान के पास गयी?
ज)..
13) युद्ध के समय में श्री महाविष्णु थक कर किस प्रदेश में चले गये थे?
ज)..
14) श्री महाविष्णु के शरीर से पैदा हुई युवती का नाम क्या है?
ज)..
15) मुरासुर नामक राक्षस का किन्होंने वध किया?
ज)..

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

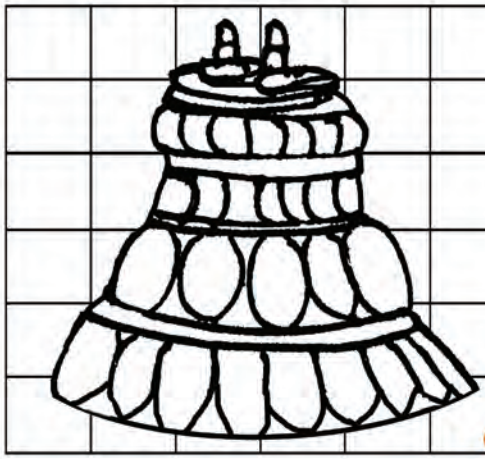

बगल में सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये-

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) व्रत	अ) जल
2) अभिषेक	आ) तोरण
3) नैवेद्य	इ) घंटा को बजाना
4) संप्रोक्षण	ई) प्रसाद
5) मंगल आरती	उ) पुण्यहवचन

1) आ 2) अ 3) ई 4) उ 5) इ

नारायण मंत्र

ॐ नारायणाय विद्महे
वासुदेवाय धीमहि।
तन्नोः विष्णुः
प्रचोदयात्।।

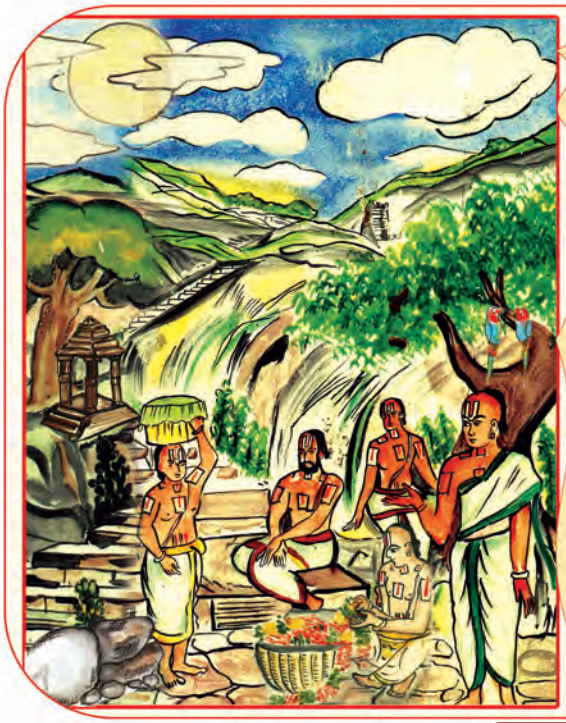

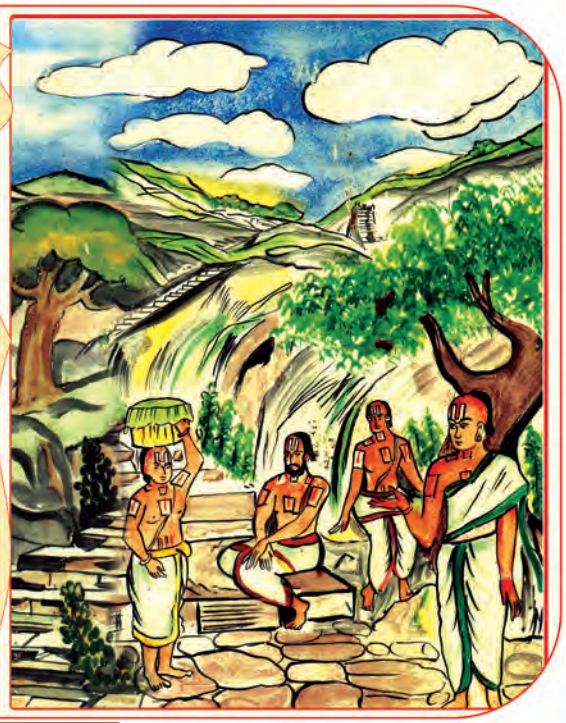

चित्र में अंतर खोजे!

1) सूर्य, 2) पक्षी, 3) मंडप, 4) चट्टान, 5) आरती और फूल टोकरी, 6) हाथ के कंकण, 7) बालक.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : .....
   (अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) .....
   .....
   पिनकोड .....
   मोबाइल नं .....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड
   ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
   विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
   धनादेश (BC's) / मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) /
   भारतीय डाकघर (IPO) / ई.एम.ओ. (EMO) / :
   दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने केलिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877

दूरभाष :
2264359, 2264543.

संपादक : 2264360

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र
ॐ नमो वेंकटेशाय

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

समर्पित पुष्पों से (सूखी-तकनीकी से) तैयार किए गए उत्पादक

फोटो फ्रेम्स और की-चैन्स (सूकी-तकनीकी से बनाए गए)

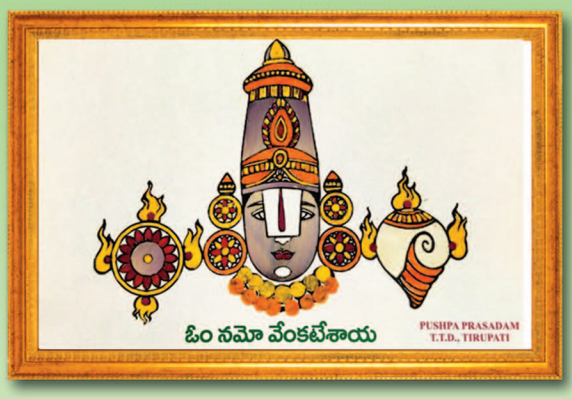

अगर बत्तियाँ (भगवान को समर्पित पुष्पों से बनायी गयी)

समाचार के लिए - 0877-2277777, 2233333

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthnams
Printing on 25-05-2023 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for
India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2021-2023
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2021-2023"
Posting on 5th of every month.

श्री नम्मालवार शात्तुमोरा

02-06-2023